सितम्बर-२०१६ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

सितम्बर-२०१६

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ५७

सब्ज़ी में आये स्वाद, मसाले पड़ें कम !
एम.डी.एच. मसालों में है, इतना दम !

जब आप स्वादिष्ट सब्जियों का आनन्द उठाते हैं तो जान लीजिये कि सब्ज़ी का अपना कोई स्वाद नहीं होता, स्वाद आता है मसालों से।

सब्जी सस्ती हो या महंगी उसका स्वाद बनता है मसाले से। सब्जी बनाने में जितनी भी चीज़ें इस्तेमाल होती हैं जैसे - सब्जी, घी - तेल, मसाले, गैस आदि, उनमें सबसे सस्ता सिर्फ मसाला ही होता है जो कि सब्जी के स्वाद को बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

एम.डी.एच. मसाले प्राकृतिक रूप से शुद्ध एवं उत्तम क्वॉलिटी के साबुत मसालों से तैयार होते हैं, इसलिए यह दूसरों के मसालों के मुकाबले में कम पड़ते हैं।

एम.डी.एच. मसालों की श्रेष्ठ क्वॉलिटी और शुद्धता का रहस्य महाशियाँ दी हट्टी के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी का 80 वर्षों का अनुभव, लगन, मेहनत और मसालों की परख है। वह किसी भी मिर्च - मसाले की शुद्धता और गुणवत्ता का अनुमान उसे जरा सा हाथ में लेकर और सूंघकर कर लेते हैं। केवल बेहतरीन चुने हुए साबुत मसालों के मिश्रण से ही एम.डी.एच. मसाले बनते हैं।

MDH

मसाले

असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
भाद्रपद शुक्ल षष्ठी
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२

September - 2016

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २७

१९ वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव ०९

०४	वेद सुधा
०७	कथा सरित-वाणी का चोर
०८	हीरक जयन्ती-श्री सुरेश चन्द्र आर्य
१०	वेद नित्यत्व विषय
१३	ऋषि भाषा में परिवर्तन
१४	भाषा का महत्व
१६	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ६/१६
१७	द्रौपदी केवल एक पतिव्रता
१९	एक या पाँच
२२	सबरीमला मंदिर
२३	संस्कारों का अन्तिम संस्कार
२८	स्वास्थ्य- शहद और स्वास्थ्य
३०	सत्यार्थपीयूष- राजा-पद दैवीय नहीं?

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ०४

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

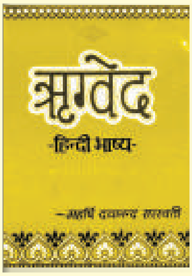

वेद सुधा

ज्ञानी पुरुष सब ओर ईश्वरकृत अद्भुत बातों को देखता है

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति।
कृतानि या च कर्त्वा।।

– ऋग्वेद १/२५/११

ऋषिः– शुनः शेप आजीगर्तिः।। देवता–वरुणः।। छन्दः– गायत्री।।

विनय– इस संसार में हम बहुधा आश्चर्यचकित कर देने वाली घटनाएँ होते देखा करते हैं। इनका करनेवाला कौन है? वैसे तो प्रतिदिन होने वाली बातों को भी यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो हमें उनमें भी बड़ी अद्भुतता दीखेगी। ये अन्धकार और प्रकाश कितनी अद्भुत वस्तु हैं जिनका परिवर्तन हम रोज सायं प्रातः देखते हैं। नन्हें से बीज से बड़ा भारी वृक्ष बन जाना। अभी चलते फिरते, हँसते-खेलते दीखते मनुष्य का एकदम ऐसा सो जाना कि वह फिर कभी न जग सकेगा; जीव से जीव पैदा हो जाना– ये सब भी वास्तव में कितनी अद्भुत बातें हैं। परन्तु जब पृथिवी आग बरसाने लगती है और ज्वालामुखी फटने से सैंकड़ों शहर बर्बाद हो जाते हैं, भूकम्प आते हैं, बड़े-बड़े साम्राज्य देखते-देखते मिट जाते हैं, थोड़े ही दिनों में एक मनुष्य सितारे की भाँति-ऊँचा उठ जाता है, यशस्वी हो जाता है या राजा रंक हो जाता है तो इनमें अद्भुतता सभी अनुभव करते हैं। विज्ञान के आजकल के अद्भुत चमत्कारों को देखो! ये सब संसार में एक से बढ़कर एक अद्भुत हैं। इन सब अद्भुतों का करने वाला कौन है? हम लोग समझते हैं कि इनके करने वाले मनुष्य हैं, मनुष्य की वैज्ञानिक शक्ति या संघशक्ति है; या कुछ नहीं है केवल प्रकृति का खेल है परन्तु जो 'चिकित्वान्' (जानने वाले) हैं उन्हें तो सब ओर इन अद्भुतों का करने वाला वही इन्द्र (परमेश्वर) दीखता है। उसी से ये सब संसार के आश्चर्य निकलते दीखते हैं। इन सब विविध आश्चर्यों को देखते हुए उनकी दृष्टि सदा उस एक इन्द्र पर ही रहती है। उनके लिए फिर ये आश्चर्य कुछ आश्चर्य नहीं रहते। प्रभु तो गूंगे को वाचाल करने वाले और लंगड़े को भी पहाड़ लंघाने वाले हैं ही। संसार में जो अद्भुत बातें हो चुकी हैं वे सब प्रभु की ही की हुई थीं; कल जो अद्भुत घटना होने वाली है कोई तख्ता पलटने वाला है, वह भी उसी प्रभु की सहज लीला से ही होने वाला है। प्रभु की अपार लीला देखने वाले ज्ञानी इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करते। वे अद्भुत से अद्भुत घटना में भी कार्य-कारण भाव को देखते हैं। अतः हे मनुष्यों! संसार के इन आश्चर्यों को देखकर चकित होना छोड़ दो, किन्तु इनको देखकर इनके कर्त्ता को पहचानो। उस नट को पहचानो जो कि संसार को यह अद्भुत नाच नचा रहा है।

शब्दार्थ– (चिकित्वान्) ज्ञानी पुरुष (कृतानि या च कर्त्वा)= जो की जा चुकी हैं और जो की जायँगी (विश्वानि अद्भुतानि)= उन सब अद्भुत बातों को (अतः)= इस परमेश्वर से हुई (अभिपश्यति)= सब ओर देखता है।

– आचार्य अभय देव विद्यालंकार
साभार वैदिक विनय

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

जीवन के अनमोल क्षणों का,
जो करता है सुन्दर उपयोग।
हर क्षण देता हर्ष उसी को,
मिलता है सच्चा सहयोग।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

महारानी द्रौपदी

महारानी द्रौपदी महाभारत का सर्वाधिक चर्चित तथा महत्वपूर्ण चरित्र है। यहाँ तक भी कह दिया जाता है कि यदि द्रौपदी नहीं होतीं तो महाभारत भी न होता। ऐसा कहना अनुचित भी नहीं है क्योंकि द्यूत के वेदविरुद्ध कर्म के पश्चात् पतन की सभी सीमाओं को लाँघकर जब द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया गया और उसे इतना अपमानित किया गया कि निर्लज्जों के सम्राट को भी लाज आ जाय, तब जब विदुर और विकर्ण को छोड़ भीष्म सहित उस समय के महिमामंडित महामनाओं में से किसी ने भी दुर्योधन मंडली का विरोध करने का साहस नहीं किया, मानो महाभारत का युद्ध उसी समय निश्चित हो गया था जिसकी गूँज उस समय विराट नगर में प्रबल रूप से सुनायी दी जब श्री कृष्ण संधि प्रस्ताव लेकर कौरवों की सभा में जा रहे थे और सभी उन्हें सम्मति प्रदान कर रहे थे कि उन्हें संधि प्रस्ताव में क्या कहना चाहिए। सबके युद्ध के पक्ष और विपक्ष में अपने-अपने मत थे। अन्यों द्वारा दौत्य कर्म किये पश्चात् श्रीकृष्ण को शान्ति-दूत बनकर जाना था। फिर वही सम्मतियाँ। आश्चर्य यह था कि अनपेक्षित रूप से भीम तक इस बार शांत थे। उनका अभिप्राय जान द्रौपदी को कष्ट हुआ। जब कृष्ण को द्रौपदी ने अपनी बात भी कह ली तब अंत में अश्रु-पूरित नेत्रों से अपने लम्बे घुंघराले बालों को हाथ में ले द्रौपदी उन्हें कृष्ण को दिखाती हुयीं बोलीं-

अयं ते पुण्डरीकाक्ष दुःशासन करोद्धितः।
स्मर्तव्यः सर्वकार्येषु परेषा संधिमिच्छता ।। – महाभारत उद्योगपर्व ७१/२५

'हे श्रीकृष्ण! शत्रुओं के साथ संधि की इच्छा से आप जो-जो कार्य या प्रयत्न करें उस सबमें दुश्शासन के हाथ से खींचे हुए इन केशों को याद रखें।' मानो द्रौपदी का यह अंतिम शस्त्र था जो उन्होंने कृष्ण के ऊपर चला दिया। कृष्ण को कहना ही पड़ा –

'यदि काल के गाल में जाने वाले धृतराष्ट्र-पुत्र मेरी बात नहीं सुनेंगे तो मारे जाकर धरती पर लोटेंगे और कुत्तों तथा सियारों का भोजन बन जायेंगे ...... हिमालय पर्वत अपनी जगह से टल जाय, पृथ्वी के सैंकड़ों टुकड़े हो जायँ तथा नक्षत्रों सहित आकाश टूट पड़े, परन्तु मेरी यह बात झूँठी नही हो सकती।'

तो इस प्रकार द्रौपदी का चरित्र महाभारत में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पर चिरकाल से एक प्रश्न द्रौपदी को लेकर खड़ा है जिसके उत्तर के बारे में महाभारतविद् एक-मत नहीं हैं। प्रश्न है द्रौपदी के कितने पति थे? कुछ विद्वानों का मत है कि द्रौपदी का एक ही पति था जबकि कुछ का मानना है कि पाँचों पांडव द्रौपदी के पति थे। आर्य जगत् के विख्यात् विद्वान् स्वनामधन्य शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी महाराज 'एक' के पक्ष में हैं। सत्यार्थ सौरभ के प्रस्तुत अंक में हमने श्री अभिमन्यु खुल्लर का एक लेख दिया है जिसमें उन्होंने द्रौपदी के पाँच पति थे, यह माना है। इसी अंक में हमने एक लेख दिया है जिसमें कतिपय प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि धर्मराज युधिष्ठिर ही मात्र द्रौपदी के पति थे। हम दोनों पक्ष पाठकों के समक्ष रखना चाहते थे इसी से हमने ये लेख साथ-साथ दिए। यद्यपि दूसरे लेख के लेखक का नाम ज्ञात न हो सका पर उन तर्कों में वजन है। महत्वपूर्ण होने से सम्पादकीय के अन्तर्गत अपना निवेदन भी प्रस्तुत करना चाहते हैं। हम यह भी मानते हैं कि एक ही अंक में एक चरित्र से सम्बंधित इतनी सामग्री पाठकों को अनुचित लग सकती है, पर जैसा हमने कहा कि इस प्रकरण के सभी पक्षों को एक साथ देना ही हमारा उद्देश्य रहा है।

अगर वर्तमान में उपलब्ध महाभारत को देखा जाय तो ऐसे स्थल निःसंदेह मिलते हैं जहाँ द्रौपदी के पाँच पतियों का जिक्र आता है। उदाहरण के लिए केवल उस समय का वर्णन लें जहाँ द्यूत में हारने के परिणामस्वरूप द्रौपदी को एक वस्त्र पहने ही घसीट कर कुरुसभा में दुःशासन द्वारा लाया जाता है। कोई भी द्रौपदी के विकट प्रश्न का उत्तर स्पष्ट नहीं देता कि क्या पति, हारने के पश्चात् पत्नी को दाँव

पर लगा सकता है? ऐसे में विकर्ण अपना मत प्रकट करता है तथा जो कुछ कहता है उसमें यह भी है–
'सती साध्वी द्रौपदी समस्त पांडवों की समान रूप से पत्नी है केवल युधिष्ठिर की ही नहीं।' (अतः उसे हारने का अधिकार एक का नहीं हो सकता)। विकर्ण के इस कथन का सभा में किसी के द्वारा विरोध नहीं किया जाता यहाँ तक कि द्रौपदी के द्वारा भी नहीं।
दुर्योधन एक प्रकार से द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर देने हेतु पांडवों को चुनौती देता है– 'द्रौपदी तुम्हारा यह प्रश्न तुम्हारे ही पति महाबली भीम, अर्जुन, सहदेव और नकुल पर छोड़ दिया जाता है।' यहाँ पर भी दुर्योधन भरी सभा में समस्त पांडवों को द्रौपदी का पति बतला रहा है और कोई भी विरोध नहीं कर रहा।
दूसरी ओर 'एक पति' के पक्ष में हमने जो लेख दिया है, उसमें भी स्पष्ट प्रमाण दिए हैं।
यहाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण बात हम कहना चाहेंगे कि यह तथ्य पूर्णतः प्रमाणित है कि प्राचीन ग्रंथों में समय के कालक्रम में निश्चित रूप से मिलावटें की गयीं हैं। आज भी महाभारत के सैकड़ों पाठ मिलते हैं जिनमें भाषात्मक तथा तथ्यात्मक भिन्नता मिलती है। प्रमुख रूप से तीन पाठ हैं दाक्षिणात्य, उत्तरी तथा नीलकंठी। इनमें विशद् भेद भी हैं। द्रौपदी स्वयंवर की बात लें। गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित महाभारत में वहाँ कर्ण के उपस्थित रहने, धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने तथा जातिगत आधार पर द्रौपदी द्वारा कर्ण के मछली भेदन का प्रयत्न करने से पूर्व ही वर्ज दिए जाने का उल्लेख है।
परन्तु दाक्षिणात्य पाठ में कर्ण के द्वारा प्रत्यंचा और बाण चढ़ाने की बात है ही नहीं। भंडारकर ने भी इसे ग्रहण नहीं किया है। नीलकंठी पाठ में भी यह है कि कर्ण प्रत्यंचा चढ़ा नहीं सका। अब पाठक देख सकते हैं कि लोक-प्रचलित तथा सर्वस्वीकार्य द्रौपदी के इस कथन **'नाहं वरयामि सूतं'** का तो प्रसंग ही पैदा नहीं हुआ था।
वस्तुतः हमारी सम्मति में द्रौपदी के पाँच पति होने का जो हेतु बताया गया है वह गले नहीं उतरता। सबसे पहली बात तो यह है कि तत्कालीन समय में बहुपतित्व प्रथा का वर्णन महाभारत में कहीं नहीं मिलता। इसके विपरीत इसे वेद-विरुद्ध निन्द्य कर्म बतलाया गया है। स्वयं कुन्ती इसे अत्यन्त हेय मानती हैं। देखिये वह कहती हैं कि–
१. 'हाय मेरे मुँह से अत्यन्त अनुचित बात निकल गयी', वे अधर्म-भय से चिन्ता में पड़ गयीं, वे स्वीकार करती हैं कि भूल से भिक्षा समझने के कारण उन्होंने बाँटने की बात कही।
२. अब उनकी दो समस्याएँ थीं– प्रथम उनकी बात झूँठी न हो जाय, तो हमारा कथन है कि प्रकरण ही गलत समझने के कारण कोई व्यवस्था दे दी जाय तो सही प्रकरण सामने आने पर सही व्यवस्था देना अनैतिक कैसे कहा जा सकता है और विशेष रूप से तब जब 'पत्नी बाँटने' की व्यवस्था को स्वयं कुन्ती पाप पूर्ण समझती हैं। वे स्पष्ट कहतीं हैं –'क्या किया जाय कि जिससे इस पाञ्चालकुमारी को न तो पाप लगे और न नीच योनियों में ही भटकना पड़े।' बिल्कुल स्पष्ट है कि कुन्ती देवी 'बहुपतित्व' को पाप और वह भी ऐसा पाप मानती हैं जिसके फलस्वरूप द्रौपदी को कर्म-फल के रूप में आगामी जन्मों में नीच योनियाँ प्राप्त होंगी। (यद्यपि बहुपतित्व में सहभागी पुरुषों को भी कोई दण्ड मिलेगा यह बात यहाँ नहीं कही गयी है)

द्रुपद तथा धृष्टद्युम्न ने भी बहुपतित्व का स्पष्ट निषेध करते हुए इसे अधर्म तथा वेद-विरुद्ध कर्म बताया –
लोकवेदविरुद्धं त्वं नाधर्मं धर्मविच्छुचिः।
कर्तुमर्हसि कौन्तेय कस्मात ते बुद्धिरीदृशी।।
३. जहाँ तक वेदव्यास जी के समझाने की बात है तो उस कथा को जो वेदव्यास जी ने द्रुपद और धृष्टद्युम्न को समझाने के लिए कही थी, अगर पढ़ें तो स्पष्ट होगा कि सर्वथा सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने के कारण वह कथन अविश्वसनीय होने से अमान्य है। वेदव्यास जैसा ऋषि न ऐसी बात कह सकता है, न लिख सकता है।
एक विशेष बात रही कि सम्पूर्ण महाभारत के केंद्र में रहने वाले, पांडवों के केवल रिश्तेदार ही नहीं अतीव सुहृद श्री कृष्ण का इस विषय में कोई वक्तव्य प्राप्त नहीं है जबकि वे द्रौपदी के भी सखा थे , यह आश्चर्य की बात है। (यद्यपि खुल्लर जी ने कृष्ण के सकारात्मक प्रयत्न का जिक्र किया है)
४. यह भी ध्यान रखें कि धौम्य द्रौपदी और युधिष्ठिर का पाणिग्रहण कराके वहाँ से चले गए थे, यह भी वर्णन आता है।
कुल मिला कर सबने 'बहुपतित्व' का विरोध किया, सिवाय परम नीतिज्ञ वेदव्यास के यह स्थापित हो चुका है। यद्यपि महाभारतकालीन भारत में जीवन-मूल्यों में गिरावट आयी थी यह तो सर्वज्ञात है परन्तु इतनी आ गयी थी कि एक अत्यन्त रूपसी युवती का रूप ही उसके लिए अभिशाप बन जाय? उसका विवाह इस कारण से एक पुरुष की बजाय पाँच भाइयों से कर दिया जाय कि अत्यधिक लावण्यमयी होने के कारण सभी भाइयों के मन में उसके प्रति लगाव पैदा हो गया था और इस लगाव के कारण फूट न पड़ जाय, और इस पर भी यह कुनबा सदैव धर्मात्मा का लेबल चिपका कर सफलता पूर्वक घूमता रहे, शत्रुओं के द्वारा अथवा तत्कालीन मनीषियों द्वारा भी इनके इस कृत्य की निंदा नहीं की जाय, यह कुछ गले नहीं उतरता। आज के इस गए गुजरे जमाने में भी ऐसा नहीं देखा जाता।

पाठकगण विचार करें कि केवल आसक्ति भाव उत्पन्न होने पर यह विवाह हुआ था -

१. 'द्रुपद कुमारी पर दृष्टि पड़ते ही उन सभी अमित तेजस्वी पाण्डुपुत्रों की सम्पूर्ण इन्द्रियों को मथकर मन्मथ प्रकट हो गया।'

२. द्रौपदी को लेकर हम सब भाइयों में फूट न पड़ जाय इस भय से राजा (युधिष्ठिर) ने अपने सभी बन्धुओं से कहा- 'कल्याणमयी द्रौपदी हम सब लोगों की पत्नी होगी।'

३. जब कुम्हार के घर में इस अतीव विषम परिस्थिति पर चर्चा हो रही थी तभी कृष्ण तथा बलराम वहाँ आये तब न कुन्ती ने और न ही किसी पाण्डव ने उनसे इस विषय में सलाह लेनी तो दूर इसकी चर्चा भी नहीं की।

४. द्रुपद और धृष्टद्युम्न के 'बहुपतित्व' के विरोध पर युधिष्ठिर क्या तर्क दे पाए इसकी बानगी देखनी योग्य होगी....(अ) हम लोगों में यह शर्त हो चुकी है कि रत्न को हम सब लोग बाँटकर एक साथ उपभोग करेंगे, हम अपनी उस पुरानी शर्त को छोड़ना या तोड़ना नहीं चाहते (ब) जब द्रुपद इसे वेद-विरुद्ध तथा अधर्म बताते हैं तो युधिष्ठिर के तर्क- 'मेरी वाणी कभी झूँठ नहीं बोलती, मेरी बुद्धि भी कभी अधर्म में नहीं लगती। हमारी माता ने हमें ऐसा ही करने की आज्ञा दी और मेरे मन में भी यही ठीक जँचा।' क्या बात है धर्मराज? तर्क कोई नहीं, बस आपके मन को जँचा, इसलिए 'बहुपतित्व' धर्म हो गया?

श्री खुल्लर ने अपने लेख के अन्त में सत्यवती, शान्तनु, वेदव्यास आदि महाभारतकालीन पात्रों के चरित्र की गिरावट को प्रस्तुत करते हुए तर्क दिया है कि ऐसे में 'बहुपतित्व' भी स्वीकार किया गया तो कौन बड़ी बात हो गयी (स्थानाभाव के कारण हमने वह भाग छोड़ दिया है) परन्तु वहाँ भी इतना तो ध्यान रखना होगा कि नियोग वेद-प्रतिपादित व्यवस्था है। अस्तु। हमने दोनों पक्ष रखने के लिए दोनों ही लेख एक साथ दिए हैं। कुछ अपनी सोच का दिग्दर्शन भी किया है। पाठक-गण विचारें और निर्णय लेवें।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

कथा सरित

वाणी का चोर

एक दिन चोरों की प्रतिष्ठित जाति के एक प्रतिष्ठित चोर प्रणेश की भेंट व्यापारियों की प्रतिष्ठित जाति के प्रतिष्ठित व्यापारी कुंडपुरा से हुई। वे अपने-अपने व्यवसाय के विषय में बतियाने लगे-

'आजीविका के लिए चोरी करना मुझे बहुत जोखिम भरा लगता है', व्यापारी कुंडपुरा ने कहा, 'एक न एक दिन तुम पकड़े जाओगे और तुम्हारे शिकार बदला और न्याय की माँग करेंगे।'

'चोरी मात्र व्यवसाय नहीं है, एह एक कला है,' चोर प्रणेश ने सज्जनता से कहा। 'अनादि काल से ही हमारे परिवार में पिता से पुत्र को चौर्य कला की दीक्षा मिलती रही है; बिना नजर में आए चोरी करने की कला, ऐसे चोरी करना कि भागना न पड़े यदि आवश्यक हो तो खतरनाक स्थितियों से चुपके से निकल जाने की कला, और ऐसे चोरी करना कि उसमें कभी झूठ न बोलना पड़े।'

'क्या! तुम चोरी करते हो पर झूठ नहीं बोलते! व्यापारी कुंडपुरा ने चकित होते हुए कहा। 'इससे बढ़कर तो कुछ हो ही नहीं सकता। व्यापार में हम इसके विपरीत करते हैं। यह सच है कि हम कुछ चुराते नहीं हैं, पर जहाँ तक अपने माल के बारे में बढ़ा चढ़ाकर बोलने का सवाल है, लम्बे की जगह पतले चावल देने का सवाल है, दालों की उत्तमता के बारे में झूठ बोलने का सवाल है, तोल में हेरफेर करने का सवाल है, अथवा शुद्ध सोना बताकर सोने का पानी चढ़ा धातु और कभी-कभी ताँबा बेच देने का सवाल है तो हम ऐसा करते हैं। देखो, हमें आजीविका चलानी है।'

'यदि ऐसा है तो', तुम धोखेबाज हो। जब मैं चुराता हूँ तो, मैं बस वही लेता हूँ, जो लेता हूँ उससे अधिक कुछ नहीं लेता। जबकि तुम जब झूठ बोलते हो तो, तुम वाणी की चोरी करते हो, और वाणी की चोरी करके तुम पूरे संसार को चुराते, नष्ट और तहस-नहस कर देते हो।'

और उसने पवित्र ग्रन्थ से यह उद्धृत किया- 'सब कुछ वाणी से निर्धारित होता है। वाणी सबका मूल है। सब कुछ इससे निकलता है। जो वाणी को लेकर बेईमान होता है। वह हर मामले में बेईमान होता है।'

साभार- देश विदेश की ११० बोधकथाएँ

शिवसंकल्प

‘आज मेरे लिए मनन और चिन्तन का दिन है, कुछ संकल्प लेने का दिन है। तेजी से बढ़ता हुआ आतंकवाद, तेजी से बढ़ता हुआ धर्म परिवर्तन, तेजी से बढ़ती हुई हत्याएँ, आत्महत्याएँ और हिंसा सारी सीमाओं को लाँघता हुआ बलात्कार, सारी सीमाओं का लाँघता हुआ नग्न प्रदर्शन हमारी गौरवशाली भारतीय संस्कृति का चीर हरण कर रहा है। हमारी गौरवशाली भारतीय संस्कृति को तार-तार कर रहा है। हमारी अखण्डता को ललकार रहा है। हमें इस ललकार का, इस चुनौती का बहादुरी से सामना करना है। इस पर विजय प्राप्त करनी है।

मैं यह संकल्प करता हूँ कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान होने के नाते मैं सम्पूर्ण आर्य जगत् को साथ लेकर सबका स्नेह व विश्वास लेकर, सबका प्यार व सम्मान लेकर कृण्वन्तो स्वयं आर्यम्, कृण्वन्तो परिवार आर्यम्, कृण्वन्तो राष्ट्र आर्यम् के दुर्गम मार्ग को पार करते हुए उन पथों पर बिखरे हुए काँटों को पुष्पों में बदलते हुए कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को सार्थकता प्रदान करने का पूर्ण प्रयास करता रहूँगा। मैं यह संकल्प करता हूँ कि मैं परिवार में रहकर भी एक संन्यासी की तरह दैनिक जीवन में पंच महायज्ञों का पूर्ण रूप से पालन करते हुए तन-मन-धन से मानव कल्याण के प्रत्येक कार्य में निष्काम भाव से स्वयं को समर्पित रखूँगा।’

– सुरेश चन्द्र आर्य

श्री सुरेश चन्द्र आर्य

हीरक जयन्ती महोत्सव

चित्रमय झलकियाँ

।।ओ३म्।।

निमन्त्रण-पत्र

१९ वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव

०१ से ०३ अक्टूबर २०१६

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वानप्रस्थ, उपदेशकों, भजनोपदेशकों भजनोपदेशिकाओं के उद्बोधन श्रवण करने का अनुपम अवसर

कृपया ध्यान दें-

१. उदयपुर रमणीक स्थल है। अतएव यह सत्संग लाभ के अतिरिक्त पर्यटन लाभ का भी अभूतपूर्व अवसर है।

२. अक्टूबर में रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया गर्म वस्त्र व बिस्तर साथ लावें।

३. **अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें।** ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।

४. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। **यह व्यवस्था सशुल्क होगी।** **सम्पर्क : +919829063110**

५. **श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है। अपना छोटा-बड़ा अर्थ-सहयोग अवश्य दें।** **चैक या ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के नाम से ही भेजें।**

प्रभु कृपा से व आप सभी के सहयोग से, **यह सत्यार्थ प्रकाश भवन आज दर्शनीय व प्रेरक स्थल के रूप में ख्याति प्राप्त है।** प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में आने वाले दर्शनार्थीगण, **(गत वर्ष २५००० सहस्र से अधिक)** यहाँ से वैदिक विचारधारा का परिचय प्राप्त कर, प्रेरणा ले रहे हैं।

आमन्त्रण है आप सभी को, आवें दयानन्द के धाम,
एक वर्ष में एक बार तो, दर्शन भी देवें श्रीमान्।
आप सभी जन अवश्य पधारें, जीवन में इस व्रत को धारें,
मनीषियों से पाके प्रेरणा, जुट जावें ऋषिवर के काम।।

१९वें सत्यार्थप्रकाश महोत्सव पर सपरिवार इष्टमित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल अध्यक्ष	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती न्यासी	अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष
डॉ. अमृतलाल तापड़िया संयुक्त मंत्री एवं संयोजक	भवानीदास आर्य मंत्री	विजय शर्मा उपाध्यक्ष
नारायण मित्तल कोषाध्यक्ष	श्री सुरेश चन्द्र आर्य न्यासी	श्रीमती शारदा गुप्ता महिला संयोजिका

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४२३५१०१, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org,
E-mail : satyarthnyas1@gmail.com

नवलखा महल, उदयपुर

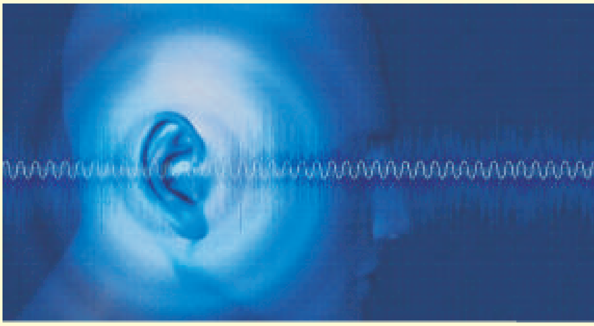

वेद नित्यत्व विषय और स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द सरस्वती की यह मान्यता रही है कि वेद (ज्ञान) नित्य है। चूँकि ईश्वर के अनन्त गुण हैं और उनमें ज्ञान का भी स्थान है। फिर वेद ईश्वर से उत्पन्न हैं इससे वे स्वतः नित्यस्वरूप ही हैं। स्वामी जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में इस विषय को उठाया है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अध्याय ३ का शीर्षक **'अथ वेदानां नित्यत्व विचार'** रखा गया है। अपने विषय की सिध्दि हेतु आपने तीन तरीके अपनाए हैं-

१. व्याकरण शास्त्र के आधार पर अक्षर, शब्द, छन्द आदि को नित्य सिद्ध करना।

२. शास्त्रों के एतद् विषय में किए गए निर्णयों को प्रमाण के रूप में उपस्थित करना।

३. युक्तियों के द्वारा ज्ञान को नित्य सिद्ध करना।

इस लेख में हम स्वामी जी के आधार पर ही इस विषय पर विचार कर रहे हैं। स्वामी जी की शैली 'प्रश्नोत्तर' के द्वारा अपने विषय की सिध्दि करना है, उसका उपयोग भी हम करेंगे।

प्रश्न- गण पाठ अष्टाध्यायी और महाभाष्य में अक्षरों के लोप आगम और विकार आदि कहे गए हैं फिर शब्दों का नित्यत्व कैसे हो सकता है?

उत्तर- पाणिनि का मत है कि शब्द नित्य ही होते हैं तथा कान से सुनकर जिनका ग्रहण होता है, बुध्दि से जो जाने जाते हैं, जो वाक् इन्द्रिय से उच्चारण करने से प्रकाशित होते हैं और जिनका निवास का स्थान आकाश हो उनको शब्द कहते हैं। क्योंकि जो उच्चारण और श्रवण आदि हम लोगों की क्रिया है उसके क्षण भंगुर होने से अनित्य गिनी जाती है (परन्तु) इससे शब्द अनित्य नहीं होते क्योंकि यह जो हम लोगों की वाणी है वही वर्ण-वर्ण के प्रति अन्य-अन्य होती जाती है परन्तु शब्द तो सदा अखण्ड एकरस ही बने रहते हैं।

प्रश्न- शब्द जो उच्चारण किए के पश्चात् नष्ट हो जाता है और उच्चारण के पूर्व सुना नहीं जाता है (तो) जैसे उच्चारण क्रिया अनित्य है वैसे ही शब्द भी अनित्य हो सकता है। फिर शब्दों को नित्य क्यों मानते हो?

उत्तर- शब्द तो आकाश की नाईं सर्वत्र एकरस हो रहे हैं परन्तु जब उच्चारण क्रिया नहीं होगी तब प्रसिद्ध सुनने में नहीं आते। जब उच्चारित किए जाते हैं तब सुनने में आते हैं। तभी शब्द प्रसिद्ध होते हैं। जैसे गौ के उच्चारण में जब पर्यन्त उच्चारण क्रिया 'ग' कार में रहती है तब पर्यन्त 'औ' कार में नहीं जब 'औ' कार में है तब गकार और विसर्जनीय में नहीं रहती है। इस प्रकार वाणी की उत्पत्ति और नाश होता है शब्द का नहीं। किन्तु आकाश में शब्द की प्राप्ति होने से शब्द तो अखण्ड एकरस भरे रहते हैं परन्तु जब तक वायु और वाक् इन्द्रिय की क्रिया नहीं होती तब पर्यन्त शब्दों का उच्चारण और श्रवण भी नहीं होता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि शब्द आकाश की नाईं नित्य ही है।

जब व्याकरण शास्त्र के नियम से शब्द नित्य होते हैं तो वेदों के शब्दों की तो कहना ही क्या क्योंकि वेदों के शब्द तो सब प्रकार से नित्य ही बने रहते हैं।

व्याकरण के नियम से शब्द को नित्य सिद्ध कर देने के बाद स्वामी जी शास्त्रों के प्रमाण उपलब्ध कराते हैं। वे लिखते हैं- 'इसी प्रकार जैमिनि मुनि ने भी शब्द को नित्य माना है।

नित्यस्तु स्याद्दर्शनस्य परार्थत्वात्। - पूर्व मीमांसा १/१/१८

शब्द में जो अनित्य होने की शंका आती है उसका 'तु' शब्द से निराकरण किया है। शब्द नित्य ही है क्योंकि उच्चारण क्रिया से जो शब्द का श्रवण होता है सो अर्थ के जानने के लिए ही है इससे शब्द अनित्य नहीं हो सकता। जो शब्द का उच्चारण किया जाता है उसकी ही प्रत्यभिज्ञा होती है कि श्रोत्र द्वारा ज्ञान के बीच में वही शब्द स्थिर रहता है और उसी शब्द से अर्थ की प्रतीति होती है। जो शब्द अनित्य होता तो अर्थ का ज्ञान कौन कराता क्योंकि वह शब्द ही नहीं रहा, फिर अर्थ कौन जनावे। और जैसे अनेक देशों में अनेक पुरुष एक काल में ही एक 'गौ' शब्द का उच्चारण करते हैं। इसी प्रकार उसी शब्द का उच्चारण बारंबार भी होता है इस कारण से भी शब्द नित्य है। जो शब्द अनित्य होता तो यह व्यवस्था कभी नहीं बनती। सो जैमिनि मुनि ने

इस प्रकार के अनेक हेतुओं से पूर्व मीमांसा में शब्द को नित्य सिद्ध किया है।

इसी प्रकार वैशेषिक दर्शन में कणाद मुनि ने भी कहा है–

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्। – वै.द.१/१/३

वेद ईश्वरोक्त है, इनमें सत्य विद्या और पक्षपात रहित धर्म का ही प्रतिपादन है इससे चारों वेद नित्य हैं। क्योंकि ईश्वर नित्य है इससे उसकी विद्या भी नित्य है।

इसी प्रकार न्याय दर्शन में गौतम मुनि भी शब्द को नित्य कहते हैं।

मन्त्रायुर्वेद प्रमाण्यवच्चतत्प्रामाण्यमाप्त प्रामाण्यात्। – न्याय २/१/६८

वेदों को नित्य ही मानना चाहिए क्योंकि सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज पर्यन्त ब्रह्मादि जितने आप्त (पुरुष) होते आए हैं वे सब वेदों को नित्य ही मानते आए हैं। उन आप्त पुरुषों का अवश्य ही प्रमाण करना चाहिए। ....उन्होंने वेदों का यथावत् नित्य गुणों से प्रमाण किया है। जिन्होंने आयुर्वेद को बनाया है। जैसे आयुर्वेद वैद्यकशास्त्र के एक-एक देश में कहे औषध और पथ्य के सेवन करने से रोग की निवृत्ति से सुख प्राप्त होता है जैसे एक देश में कहे के सत्य होने से उसके दूसरे भाग का भी प्रमाण होता है। इसी प्रकार वेदों का भी प्रमाण करना सब मनुष्यों को उचित है। क्योंकि वेद के एक देश में कहे अर्थ का सत्यापन विदित होने से उनसे भिन्न वेदों के जो भाग हैं कि जिनका अर्थ प्रत्यक्ष न हुआ हो उनका भी नित्य प्रमाण अवश्य करना चाहिए। क्योंकि आप्त पुरुष का कथन मिथ्या नहीं होता।

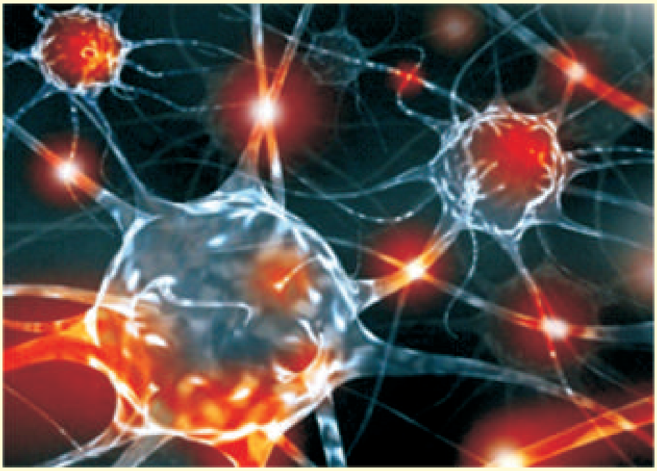

(मन्त्रायु.) इस सूत्र के भाष्य में वात्स्यायन मुनि ने वेदों का नित्य होना स्पष्ट प्रतिपादन किया है कि जो आप्त लोग हैं वे वेदों के अर्थ को देखने दिखाने और जानने वाले हैं। जो-जो उस मंत्र के अर्थ के दृष्टा, वक्ता होते हैं, वे ही आयुर्वेद के बनाने वाले हैं। जैसे उनका कथन आयुर्वेद में सत्य है वैसे ही वेदों के नित्य मानने का उनका जो व्यवहार है सो भी सत्य ही है ऐसा मानना चाहिए। इसी प्रकार योगशास्त्र में पतंजलि मुनि कहते है।

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्। – यो. शा. १/१/२६

जो कि प्राचीन अग्नि, वायु, अंगिरा और ब्रह्मादि पुरुष सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुए थे उनसे जैसे हम लोग पर्यन्त और आगे जो होने वाले हैं, इन सबका गुरु परमेश्वर ही है क्योंकि वेद द्वारा सत्य अर्थों का उपदेश करने से ईश्वर का नाम गुरु है। सो ईश्वर नित्य ही है क्योंकि ईश्वर में क्षणादि काल की गति का प्रचार ही नहीं है और वह अविद्या आदि दोषों से और पापकर्म तथा उनकी वासनाओं के भोगों से अलग है। जिसमें अनन्त विज्ञान सर्वदा एक रस बना रहता है उसी के रचे वेदों का भी सत्यार्थपना और नित्यपना भी निश्चित है, ऐसा ही सबको जानना चाहिए। इसी प्रकार सांख्य दर्शन में कपिलाचार्य भी कहते हैं–

निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्।। – सां सूत्र. ५/५१

परमेश्वर की स्वाभाविक जो विद्या शक्ति है, उससे प्रकट होने से वेदों का नित्यत्व और स्वतः प्रामाण्य सब मनुष्यों को स्वीकार करना चाहिए। व्याकरण अष्टाध्यायी, महाभाष्य, पूर्व मीमांसा, वैशेषिक दर्शन, न्यायशास्त्र, वेदान्त दर्शन, योगशास्त्र, सांख्य दर्शन से अपने विषय को सिद्ध करने के उपरान्त स्वामी दयानन्द सरस्वती इसी विषय को युक्तियों से सिद्ध करते हैं। इसका कारण यह है कि कोई व्यक्ति इन शास्त्रों के प्रमाण को यह कहकर कि मैं इन ग्रन्थों की मान्यताओं को सत्य स्वीकार नहीं करता हूँ इनके निष्कर्षों को नकार भी सकता है परन्तु व्यक्ति को नहीं नकारा जा सकता है। वे लिखते हैं कि जैसे शास्त्रों के प्रमाणों से वेद नित्य हैं, वैसे ही युक्ति से भी उसका नित्यपन सिद्ध होता है। क्योंकि 'असत्' से 'सत्' का होना कभी नहीं हो सकता तथा 'सत्' का कभी अभाव भी नहीं होता। जो 'सत्' है उसी से आगे प्रवृत्ति भी हो जाती है और जो 'असत्' वस्तु ही नहीं है उससे दूसरी वस्तु किसी प्रकार से नहीं हो सकती है। इस न्याय से भी वेदों को नित्य ही मानना ठीक है। क्योंकि जिसका मूल नहीं होता उसकी डाली, पत्र, पुष्प और फल आदि भी कभी नहीं हो सकते। .... जब ईश्वर में अनन्त विद्या है तभी मनुष्यों को विद्या का उपदेश भी किया है और जो ईश्वर में अनन्त विद्या न होती तो वह उपदेश कैसे कर सकता है? वह जगत् को भी कैसे रचता? जो मनुष्यों को ईश्वर अपनी विद्या का

उपदेश न करता तो किसी मनुष्य को विद्या जो यथार्थ ज्ञान है सो कभी नहीं होता। क्योंकि जगत् में निर्मूल का होना असंभव है।

इसमें और भी युक्ति हैं। जिसका साक्षात् अनुभव होता है उसी का ज्ञान में संस्कार होता है, संस्कार से स्मरण; स्मरण से इष्ट में प्रवृत्ति और अनिष्ट से निवृत्ति होती है।.......

इसी प्रकार जो वेदों का उपदेश ईश्वर न करता तो किसी मनुष्य को विद्या का संस्कार नहीं होता जब विद्या का संस्कार नहीं होता तो उसका स्मरण भी नहीं होता, स्मरण के बिना किसी मनुष्य को विद्या का लेश भी न हो सकता। इस युक्ति से जाना जाता है कि ईश्वर के उपदेश से वेदों को सुनकर, पढ़कर और विचार करके ही मनुष्यों को विद्या का संस्कार आज पर्यन्त होता चला आ रहा है अन्यथा कभी नहीं होता। कुछ लोगों का मानना था कि स्वाभाविक ज्ञान से ज्ञान की वृद्धि करते-करते मनुष्य वर्तमान विज्ञान की स्थिति तक पहुँच सकता था। इस धारणा को कई प्रयोगों द्वारा असत्य सिद्ध किया जा चुका है। आज भी कई कबाइली जातियाँ ज्ञान से शून्य हैं। इस प्रकार स्वामी जी ने अपने विषय को रखकर सिद्ध कर दिया है कि वेद ज्ञान नित्य है।

शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी,कोटा-३२४००९

रियो ओलम्पिक खेलों में पदक जीतकर भारतवर्ष का सर ऊँचा करने वाली भारत की इन बेटियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द)

ऋषि भाषा में परिवर्तन तथाकथित पण्डितों का मिथ्या अहंकार

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

जिस किसी की थोड़ी भी मान्यता वा पूजा साधारण जनमानस में हो जाती है, वह सबसे पहले अपने को ऋषि से बड़ा ज्ञानी मानकर ऋषि की गलतियाँ निकालने को समुद्यत हो जाता है। पर वह भूल जाता है दम्भों में विद्यादम्भ क्षणस्थायी होता है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के नामों की व्याख्यान्तर्गत एक 'कवि' शब्द की व्याख्या ऋषि ने की है। सहस्रों परिवर्तनों के समान ही इस व्याख्या में भी एक पंडित महानुभाव ने भाषा परिवर्तन किया है, उसकी परीक्षा हम पंचायवों से करेंगे। देखिए-

'कवि'

ऋषि पाठ- 'यः कौति शब्दयति सर्वा विद्याः स कविरीश्वरः' अर्थात् जो वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेष्टा और वेत्ता है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'कवि' है।'

परिवर्तित पाठ- 'जो सब विद्याओं का वेत्ता और वेद द्वारा उनका उपदेष्टा है।'

समीक्षा- यहाँ प्रश्न है कि पाठ क्यों बदला?

(क) क्या ऋषि पाठ आधुनिक हिन्दी नहीं? इसलिए बदलना आवश्यक था।

विचार- ऋषि बुद्धि परमेश्वर के ज्ञान से प्रकाशित होती है। जैसा बुद्धि में परमेश्वर का ज्ञान है- उसी अनुसार ज्ञानानुपाती शब्द अपने ज्ञाननिहित अभिप्राय को प्रकट करते हैं। आधुनिक हिन्दी में रूपान्तरण के पक्षधर विद्वानों का ज्ञान शब्दानुपाती होता है। इसलिए-

(ख) बदलने में दूषण है क्योंकि यहाँ 'कुशब्दे' धातु है। इससे 'शब्दयति' की अर्थबोधजनकता शक्ति अभिधा से सर्वप्रथम 'उपदिशति' अर्थ से उपस्थित होती है, उसकी प्रधानता होने से प्रथम वेद द्वारा सब विद्याओं का 'उपदेष्टा' यही अर्थ कथनीय है। वेत्ता तो प्रथमार्थ उपदेष्टा का साधक है।

इसको न्याय के पंचावयव वाक्य में उपन्यस्त कर इस प्रकार कहेंगे-

अत्र उपदेशनं पक्षः
उपदेशे सर्वविद्यावत्त्वं साध्यम्
वेतृत्वादिति हेतुः।
यत्र यत्र वेतृत्वं तत्र तत्र विद्यावत्त्वम्।
दृष्टान्ते-यथा स्वक्षेत्रे जीवेऽपि
तथा चायमिति निगमनम्।

उपदेश करता है- यह पक्ष है।
इसमें 'विद्यावत्त्व' साध्य है।
'वेतृत्व' हेतु है।
जहाँ-जहाँ वेतृत्व है वहाँ-वहाँ विद्यावत्त्व है।
जैसे जीव में भी यही दृष्टान्त इसी प्रकार है।

(ग) ऋषि की वाक्य रचना में प्रथम-पक्ष और साध्य है फिर हेतु है। वाक्य के उपन्यास का यही न्यायक्रम ठीक है। परिवर्तन करके इसका उलटा कर दिया। अर्थात् 'प्रथम जो सब विद्याओं का वेत्ता है' यह हेतु वाक्य रख दिया है। 'शब्दयति' से उपलब्ध अभिधार्थ को गौण बनाकर बाद में रख दिया अर्थात् **'उपस्थितं परित्यज्यानुपस्थितं प्रतिंधावति'** प्रथम तो रूप बिगाड़ा। व्यक्ति को समझना चाहिए कि 'कवि' का सीधा अर्थ उपदेष्टा है वेत्ता नहीं है। तब प्रश्न उठता है कि ऋषि ने वेत्ता कहाँ से लाकर रख दिया। इसका समाधान है कि ऋषि का यह ऊहितार्थ पाठ है क्योंकि **'सिद्धे शब्दार्थ सम्बन्धे'** महाभाष्य से शब्द और अर्थ का सम्बन्ध होता है; फिर अर्थ वेतृत्व होता है। पर यह उपदेशक और वेतृत्व कालव्यवस्थित नहीं यानी इसमें काल की दूरी नहीं होती। दोनों एक साथ हैं। अतः कवि ईश्वर ने प्रथम सृष्टि में अग्न्यादि ऋषियों को शब्दार्थ का उपदेश दिया, यह निष्कृष्टार्थ सिद्ध होता है। यही ज्ञानदान का क्रम आज तक अक्षुण्ण है।

फिर प्रश्न उठता है कि ऋषिवर के ऊहितार्थ में भी तो कोई अन्य भी मूल है या नहीं तो उत्तर है कि है। यथा-

कविर्मनीषी (सर्वज्ञः सर्वविद्यावेत्ता) तथा हि उणादि सूत्रेण कवयो वयन्ति कवयः क्रान्तदर्शिन ब्रह्माणि दयानन्दोऽपि अस्माद् बाह्येन्द्रिय विषयामतिक्रान्तमतीतादि वस्तुं द्रष्टुं शीलमस्येति क्रान्तदर्शी अर्थात् हमारी बाह्येन्द्रिय से अगम्य अतीतादि वस्तु को देखने के स्वभाव वाले क्रान्तदर्शी ऋषि होने से 'शब्दयति' शब्द के द्वारा ध्वनितार्थ वेतृत्व का दर्शन ऋषि यहाँ कर रहे हैं। अतः अभिधार्थ के बाद ऊहित वा ध्वनितार्थ का निवेश ही सर्वथा समुचित है। रूपान्तर अनुचित है।

हिन्दी भाषा का महत्व

हिन्दी दिवस पर विशेष

प्राकृत-उद्‌गमित, सम्प्रेषणायुक्त, जनतन्त्रा-अन्तक, भावपूर्ण मातृभाषा है-हिन्दी। 'भारत दुर्दशा' जैसे निबंध लिखकर इस देश को जगाने वाले महान् साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने मातृभाषा का महत्व कुछ इस प्रकार से बताया है-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ।।
अंग्रेजी पढ़िके जदपि, सब गुन होत प्रबीन ।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।।
विविध कला, शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहु, निज भाषा माँहि प्रचार ।।

हिंदी- वैसे तो यह इस देश की राजभाषा और हम सबकी मातृभाषा है परन्तु आज यह भाषा अपनी ही बुनियाद की

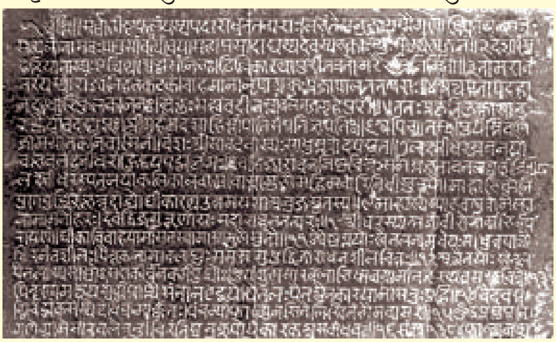

रक्षा में लगी है। ये वही भाषा है जिसने इस सोते हुए राष्ट्र को दासता की नींद से जगाया। इसी भाषा ने भारत को स्वतंत्रता का अर्थ समझाया। यही वह भाषा है जो ऐतिहासिक स्वातंत्र्य-संघर्ष की साक्षी बनी। महात्मा गाँधी के अविस्मरणीय विचारों की माध्यम बनकर इसी भाषा ने देश में परिवर्तन की नींव रखी। यही वो भाषा है जिसने विभिन्न जाति-धर्म-समुदायों में बिखरे इस देश में प्रथम बार राष्ट्रवाद की स्थापना की। शुक्ल, द्विवेदी और प्रसाद ने इसका परिष्कार किया। प्रेमचन्द गुप्त और दिनकर ने इसमें भावनाएँ भरीं। और अंततः यह भाषा भारत में अभिव्यक्ति का पर्याय बनी। इस देश की संसदीय परंपरा को इसी भाषा ने जन्म दिया। न-जाने कितनी ही बोलियों की माता यह भाषा अनगिनत पत्रों-पुस्तकों-पत्रिकाओं के माध्यम से घर-घर पहुँचती रही। आज भी सिनेमा, टीवी और रेडियो के जरिये यही भाषा हमारा मनोरंजन कर रही है। एक माता के रूप में हिंदी तो अपने समस्त कर्तव्य समुचित रूप से निभाती रही, परन्तु हम कृतघ्न इस माँ के उपकारों को भूल कर अंग्रेजी (आंटी) की गोद में जा बैठे।

मेरा उद्देश्य यहाँ हिंदी पर अंधप्रेम प्रदर्शित करते हुए अंग्रेजी का अतार्किक विरोध करना नहीं है। ऐसे कई मौलिक कारण हैं जो किसी भी राष्ट्र की सफलता के पीछे छुपे मातृभाषा के महत्व को प्रदर्शित करते हैं।

कई लोगों का यह मत है कि हिंदी देश के सभी लोग नहीं बोलते इसी कारण से हमें एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय भाषा को अपना लेना चाहिए। इसी कारण सर्वप्रथम हम लोगों की यह विचारधारा कि- हिन्दी भारत की सर्वव्यापी भाषा नहीं है, का खंडन करना चाहेंगें। सम्पूर्ण भारत में मिले शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के माध्यम से प्रमाणित यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि ८ वीं शताब्दी ई.पू. तक संस्कृत आर्यों की सामान्य बोलचाल की भाषा होने के साथ ही साहित्य की परिनिष्ठित भाषा थी। कालांतर में (२री शताब्दी ई.पू.) यह भाषा देश में 'पाली' भाषा तथा विदेशों में 'अरबी' एवं 'फारसी' में परिवर्तित हो गयी। भगवान बुद्ध ने अपने उपदेश पाली भाषा में ही दिए थे। ३री शताब्दी ई. तक आते-आते पाली भाषा से एक अपभ्रंश भाषा 'प्राकृत' का जन्म हुआ। हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ इसी प्राकृत भाषा से हुआ है। प्राकृत भाषा सिंधु नदी से उस पार फारस में 'हिंदवी' के नाम से जानी जाने लगी । वस्तुतः 'हिंदवी' शब्द की उत्पत्ति 'सिंधी' से ही हुयी है, चूँकि फारसी लोग 'स' को 'ह' उच्चारित करते थे। यही 'हिन्दवी' शब्द बाद में हिंदी हो गया। अमीर खुसरो ने इसी भाषा में साहित्य की रचना की। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि प्राकृत ही हिंदी भाषा थी। बाद में यह प्राकृत भाषा (अथवा फारसियों में हिंदी के नाम से जानी जाने वाली भाषा) विखंडित होकर पैशाची, मागधी, ब्राचड, महाराष्ट्री, अर्धमागधी, शौरसेनी आदि भाषाओं में बदल गयी। आजकल की भाषाओं पंजाबी, बिहारी, असमिया, मलयाली,

सिंहली, उड़िया, मराठी और गुजराती आदि का जन्म इन्हीं भाषाओं से हुआ। शेष क्षेत्रों में प्राकृत (अथवा मूल हिंदी) ही प्रचलन में रही। १२ वीं शताब्दी ई. में फारस आक्रमणकारियों की भारत विजय के पश्चात् भारतवर्ष 'हिन्दुस्तान' एवं प्राकृत 'हिंदी' के रूप में प्रचलित हो गयी। समय के साथ हिंदी में बृज, अवधी, बुन्देली आदि बोलियाँ विकसित हो गयीं, जिनमें साहित्य-परिष्कार भी हुआ। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आधुनिक भारत की समस्त भाषाओं का जन्म 'प्राकृत' अथवा 'हिंदवी' से ही हुआ है। यही कारण है कि हिन्दी में सभी दक्षिण एशियाई भाषाओं के शब्द चाहे वो विदेशी अरबी एवं फारसी हों या मूल संस्कृत के तत्सम शब्द हों बहुतायत में मिलते हैं। यही भाषा अखंड भारत में कैलाश मानसरोवर से लेकर सिंहल द्वीप तक प्रचलित थी, जो बाद में अपभ्रंश होकर नवीन भाषाओं के रूप में विकसित हो गयी। इस प्रकार से उपरोक्त तथ्यों के आधार पर संस्कृत की मौलिक प्रथम उत्तराधिकारी भाषा हिंदी ही है जो कि प्राकृत के रूप में देश की समस्त आधुनिक भाषाओं की जननी है एवं इसी कारण से हम इसे भारत की सर्वव्यापी भाषा का दर्जा देते हैं। साथ ही साथ यह कोई नयी जानने योग्य बात नहीं है कि हिन्दी विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह बात स्पष्ट है कि देशी बोलियों एवं भाषाओं, विदेशी अरबी-फारसी तथा संस्कृत के मूल तत्सम शब्द हिंदी में रचनाओं के प्रभाव एवं प्रवाह में बाधक नहीं होते अपितु इनका विकास ही करते हैं, चूँकि ये सभी शब्द एक ही भाषा-परिवार से आये हैं। यही कारण है कि हिंदी में उपरोक्त भाषाओं तथा बोलियों के शब्दों का मिश्रण हमें अनुचित नहीं लगता। परन्तु अंग्रेजी के सन्दर्भ में यह बात लागू नहीं होती क्योंकि यह तो एक विद्वीपीय भाषा होकर संस्कृत-जनित भाषा नहीं है। हिंदी में इसके शब्दों की मिलावट हिंदी के स्तर को गिराने का ही कार्य करेगी। यह भी सत्य है कि अंग्रेजी, हिंदी रचनाओं में प्रवाह की स्थापना में सहयोग नहीं देती। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अंग्रेजी, हिंदी का मात्र क्षय ही कर रही है। जब हमारे विद्वानों ने इस बात का विरोध किया तो अंग्रेजी के कुछ राष्ट्रविरोधी समर्थकों ने हिंदी अंग्रेजी के मिश्रण-हिंग्लिश को युवाओं के मध्य एक मजेदार भाषा के रूप में स्थापित करने का दुष्चक्र चलाना प्रारम्भ कर दिया, यद्यपि हमारे मत में हिंग्लिश में कुछ भी मजेदार नहीं है। आजकल इस हिंग्लिश के माध्यम से युवाओं के मन से परिनिष्ठित हिंदी को मिटाने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाए जा रहे हैं। मनोरंजन के माध्यम-सिनेमा, टीवी एवं विशेषकर रेडियो आरजे हिंग्लिश को लगातार बढ़ावा देते हुए इसे युवा के बीच लोकप्रिय बनाने में जुटे हुए हैं। साथ ही साथ एसएमएस संस्कृति हिंदी की सहस्त्रों वर्ष पुरानी देवनागरी लिपि को समाप्त करने का माध्यम बन गयी है। जब हमें खाद्य पदार्थों से लेकर कपड़ों तक किसी भी वस्तु में मिलावट बर्दाश्त नहीं तो फिर मातृभाषा में मिलावट हम कैसे सह सकते हैं?

कई लोग हमसे यह प्रश्न पूछते हैं कि आज के तकनीकी युग में हिंदी की उपयोगिता क्या है? इसी बात का उत्तर हमने अगले अनुच्छेदों में देते हुए स्पष्ट किया है कि सामाजिक चेतना का विकास मातृभाषा के माध्यम से ही होता है। हिंदी ही वह भाषा है जो हमें समाज की बुनियाद से जोड़ती है। इसके बिना तो हम भारतीय किसी भी क्षेत्र में विकास ही नहीं कर सकते। हिंदी साहित्य संसार के सर्वोत्तम, स्तरीय, सबसे पुराने एवं विकसित साहित्य में गिना जाता है। शृंगार, राष्ट्रप्रेम एवं भक्ति की भावनाओं के वर्णन में तो हमारे साहित्यकार सर्वश्रेष्ठ रहे हैं। हिंदी के प्रतीकात्मक निबन्धों की तुलना तो विश्व की किसी भी अन्य भाषा के निबन्धों से हो ही नहीं सकती। यह भाषा किसी भी स्तर पर निकृष्ट नहीं है, अपितु हर स्तर पर इसने अपनी श्रेष्ठता को प्रमाणित किया है।

आजकल भारतीय बाजार के वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्थान बना लेने के कारण कई विदेशी भी हिंदी सीखने पर मजबूर हो रहे है। यदि विदेश में जन्मी-पली-बढ़ी, हमारे देश की एक राजनीतिक गठबंधन की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गाँधी

स्वयं इस भाषा के महत्व को समझकर, एक आम नागरिक से जुड़ने के लिए यदि इस भाषा को सीखने का कार्य कर सकती हैं, तो हम जानकर भी अपनी भाषा को निकृष्ट क्यों समझतें हैं?

भारत एक विविधताओं से परिपूर्ण राष्ट्र होते हुए भी अपनी एकल-सांस्कृतिक-चेतना के लिए विश्वविख्यात् है। हमारी संस्कृति किसी धर्म या जाति की नहीं, अपितु हमारे भारतीय होने की द्योतक है। किसी भी संस्कृति के चार स्तंभ- राष्ट्रवाद, भाषा, आचार-विचार एवं परम्पराएँ एक रथ के चार पहियों की तरह होते हैं। यदि हम विस्तृत पटल पर विचार करें तो पायेंगें कि भारतीय संस्कृति को समाप्त करने हेतु सुनियोजित तरीके से इस सांस्कृतिक रथ के पायों पर चौतरफा आक्रमण किये जा रहे हैं, जिनमें भाषा का विध्वंस साम्राज्यवादी शक्तियों का प्रमुख उद्देश्य है। इसी प्रकार के षड्यंत्रों के कारण कई अफ्रीकी राष्ट्र टूट कर बिखर गए। यही नहीं, सोवियत गणराज्य के पतन का एक प्रमुख कारण भी यही था। किसी भी देश की सांस्कृतिक विशेषताएँ उसकी भाषा में ही संचित होती हैं। अतः यह स्पष्ट है कि भाषा का क्षय किस प्रकार से हमें सांस्कृतिक विनाश की ओर ले जाता है। यदि भारतीय संस्कृति का विनाश हो जाता है तो भारत से राष्ट्रवाद भी समाप्त हो जाएगा, इसी कारण से भारत कभी अखंड नहीं रह सकेगा, एवं यही राष्ट्रविरोधी एवं साम्राज्यवादी शक्तियों की मंशा है। इस प्रकार से अंततः खंडित भारत कमजोर होकर अपनी स्वतंत्रता भी गंवा देगा।

> **"किसी भी देश की संस्कृति विशेषताएँ उसकी भाषा में ही संचित होती है।"**

हिन्दी और इसकी बोलियाँ उत्तर एवं मध्य भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में ५८ करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मारिशस, गयाना, सूरीनाम की अधिकतर और नेपाल की कुछ जनता हिन्दी बोलती है। हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विशेषज्ञों की यह भविष्यवाणी, हिन्दी प्रेमियों के लिए बड़ी सन्तोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व की जो चन्द भाषाएँ होंगी उनमें हिन्दी भी प्रमुख होगी।

-विवेक मेहता

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ९/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (चतुर्थ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	व	■	२	ल्या	२	■	३	त्का	३	■
■	४	य	■	५	ण	■	६	ष्क	६	र ६
७	त	७	७	क ७	■	■	■	८	न्दा	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है वहाँ पुरुषों की क्या संज्ञा होती है।
२. किस बात की इच्छा रखने वाले स्त्रियों को सत्कारादि से प्रसन्न रखें?
३. पूजा शब्द का क्या अर्थ है?
४. सदा कैसा सत्य बोलें?
५. सत्पुरुषों को परोक्ष में अन्य के बारे में क्या कथन करना चाहिए?
६. बिना अपराध किसी के साथ विरोध वा विवाद करने को क्या कहा गया है?
७. कोई बुरा भी माने तो भी कैसी बात कहे बिना न रहे?
८. गुणों में दोष और दोषों में गुण लगाना क्या कहलाता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ७/१६ का सही उत्तर

१. वैश्य	२. क्षत्रिय
३. ब्राह्मण	४. आठ
५. चौथे	६. सत्याचार
७. उन्नतिशील	८. पैशाच

भूल सुधार- पूर्व के 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली-९/१६' के स्थान पर 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली-८/१६' ऐसा समझें।

"विस्तृत नियम पृष्ठ १२ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर २०१६

द्रौपदी का केवल एक पति था- युधिष्ठिर

अर्जुन ने द्रौपदी को स्वयंवर में जीता था। यदि उससे विवाह हो जाता तो कोई परेशानी नहीं थी वह तो स्वयंवर की घोषणा के अनुरूप ही होता। परन्तु इस विवाह के लिए कुन्ती कतई तैयार नहीं थी। अर्जुन ने भी इस विवाह से इंकार कर दिया था। 'बड़े भाई से पहले छोटे का विवाह हो जाये यह तो पाप है, अधर्म है।' (भवान न्वेषय् प्रथमम्)

मां मां नरेन्द्र त्वमधर्म भाजम्
कृथा न धर्मो धर्मोऽयमशिष्टदृष्ट:। (१९०-८)

कुन्ती माँ थी। यदि अर्जुन का विवाह भी हो जाता, भीम का तो पहले ही हिडिम्बा से (हिडिम्बा की ही चाहना के कारण) हो गया था तो सारे देश में यह बात स्वत: प्रसिद्ध हो जाती कि निश्चय ही युधिष्ठिर में ऐसा कोई दोष है जिसके कारण उसका विवाह नहीं हो सकता। आप स्वयं निर्णय करें कि कुन्ती की इस सोच में क्या भूल है वह माता है अपने बच्चों का हित उससे अधिक कौन सोच सकता है, इसलिए माता कुन्ती चाहती थी और सारे पाण्डव भी यही चाहते थे कि विवाह ज्येष्ठ युधिष्ठिर से हो जाये।

यहाँ प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या कोई ऐसा प्रमाण है जिसमें द्रौपदी ने अपने को केवल एक की पत्नी कहा हो या अपने को युधिष्ठिर की पत्नी बताया हो।

इसका उत्तर हाँ में है। निम्न उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

१. द्रौपदी को कीचक ने परेशान कर दिया तो दु:खी द्रौपदी भीम के पास आई, उदास थी। भीम ने पूछा सब कुशल तो है? द्रौपदी बोली जिस स्त्री का पति राजा युधिष्ठिर हो वह बिना शोक के रहे यह कैसे संभव है।

अशोच्यत्वम् कुतस्तस्य यस्या भर्ता युधिष्ठिर:।
जानन् सर्वाणि दु:खानि किं मां त्वं परिपृच्छसि।। विराट १८-१

१. यहाँ स्पष्टत: द्रौपदी स्वयं को केवल युधिष्ठिर की पत्नी बता रही है।

२. वह भीम से कहती है- जिसके बहुत से भाई श्वसुर और पुत्र हों जो इन सबसे घिरी हो तथा सब प्रकार अभ्युदयशील हो ऐसी स्थिति में मेरे सिवाय और दूसरी कौनसी स्त्री दु:ख भोगने के लिए विवश हुई होगी।

भ्रातृभि: श्वशुरै: पुत्रैर्बहुभि: परिवारिता।
एवं समुदिता नारी का त्वन्या दु:खित भवेत्।। विराट २०-१३

द्रौपदी स्वयं कहती है उसके बहुत से भाई हैं। बहुत से श्वसुर हैं। बहुत से पुत्र भी हैं फिर भी वह दु:खी है यदि बहुत से पति होते तो सबसे पहले यही कहती कि जिसके पाँच-पाँच पति हैं वह मैं दु:खी हूँ- पर होते तब न।

३. और जब भीम ने द्रौपदी से, कीचक के किए का फल देने की प्रतिज्ञा कर ली और कीचक को मार मारकर मांस का लोथड़ा बना दिया तब अंतिम श्वास लेते कीचक को उसने कहा था 'जो सैरन्ध्री के लिए कण्टक था, जिसने मेरे भाई की पत्नी का अपहरण करने की चेष्टा की थी उस दुष्ट कीचक को मारकर आज मैं अनृण हो जाऊँगा और मुझे बड़ी शान्ति मिलेगी।

अद्याहमनृणो भूत्वा भ्रातुर्भार्याहारिणम्।
शान्तिं लब्धास्मि परमां हत्वा सैरन्ध्रिकण्टकम्।। विराट २२-७६

इस पर भी कोई भीम को द्रौपदी का पति कहता हो तो क्या करें? मारने वाले की लाठी तो पकड़ी जा सकती है। बोलने वाले की जीभ को कोई कैसे पकड़ सकता है?

४. द्रौपदी को दाँव पर लगाकर हार जाने पर जब दुर्योधन ने उसे सभा में लाने को दूत भेजा तो द्रौपदी ने आने से इंकार कर दिया। उसने कहा जब राजा युधिष्ठिर पहले स्वयं अपने को दाँव पर लगाकर हार चुका था तो वह हारा हुआ मुझे कैसे दाँव पर लगा सकता है? महात्मा विदुर ने भी यह

सवाल भरी सभा में उठाया। द्रौपदी ने भी सभा में ललकार कर यही प्रश्न पूछा था- क्या राजा युधिष्ठिर पहले स्वयं को हार कर मुझे दाँव पर लगा सकता था?

सभा में सन्नाटा छा गया। किसी के पास कोई उत्तर नहीं था। तब केवल भीष्म ने उत्तर देने या लीपापोती करने का प्रयत्न किया था और कहा था, ' जो मालिक नहीं वह पराया धन दाँव पर नहीं लगा सकता, परन्तु स्त्री को सदा अपने स्वामी के ही अधीन देखा जा सकता है।

अस्वाम्यशक्तः पणितुं परस्वं स्त्रियाश्च भर्तुर्वशतां समीक्ष्य।
- सभा- ६७/४७

ठीक है युधिष्ठिर पहले हारा है पर है तो द्रौपदी का पति। पति सदा पति रहता है पत्नी का स्वामी रहता है। यानि द्रौपदी को युधिष्ठिर द्वारा हारे जाने का दबी जुबान में भीष्म समर्थन कर रहे हैं। यदि द्रौपदी पाँच की पत्नी होती तो वह बचाय चुप हो जाने के पूछती जब मैं पाँच की पत्नी थी तो किसी एक को मुझे हारने का क्या अधिकार था। द्रौपदी न पूछती तो विदुर प्रश्न उठाते कि पाँच की पत्नी को एक पति दाँव पर कैसे लगा सकता है? यह न्याय विरुद्ध है। स्पष्ट है द्रौपदी ने या विदुर ने यह प्रश्न उठाया ही नहीं। यदि द्रौपदी पाँचों की पत्नी होती तो यह प्रश्न निश्चय ही उठाती। इसलिए भीष्म ने कहा कि द्रौपदी को युधिष्ठिर ने हारा है। युधिष्ठिर इसका पति है। चाहे पहले स्वयं अपने को ही हारा हो। पर है तो इसका स्वामी और नियम बता दिया- जो जिसका स्वामी है वही उसे किसी को दे सकता है। जिसका स्वामी नहीं उसे नहीं दे सकता।

५. द्रौपदी कहती है कौरवों में धर्मराज युधिष्ठिर की धर्मपत्नी हूँ तथा उनके ही समान वर्ण वाली हूँ। आप बतावें कि मैं दासी हूँ या अदासी। आप जैसा कहेंगे वैसा मैं करूँगी।

तामिमां धर्मराजस्य भार्यां सदृशवर्णजाम्।
ब्रूत दासीमदासीं वा तत् करिष्यामि कौरवाः।। - सभा- ६६/११

द्रौपदी अपने को युधिष्ठिर की पत्नी बता रही है।

६.पाण्डव वनवास में थे दुर्योधन की बहिन का पति सिन्धुराज जयद्रथ उस वन में आ गया। उसने द्रौपदी को देखकर पूछा तुम कुशल तो हो। द्रौपदी बोली सकुशल हूँ। मेरे पति कुरु कुल रत्न कुन्तीकुमार राजा युधिष्ठिर सकुशल हैं। मैं और उनके चारों भाई तथा अन्य जिन लोगों के विषय में आप पूछना चाह रहे हैं वे सब भी कुशल से हैं। राजकुमार यह पग धोने का जल है इसे ग्रहण करो यह आसन है इस पर विराजिये।

कौरव्यः कुशली राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
अहं च भ्रातरश्चास्य यांश्चान्यान् परिपृच्छसि।। - वन- २६७/१२

द्रौपदी, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव को अपना पति नहीं बताती उन्हें पति का भाई बताती है और आगे चलकर तो एकदम स्पष्ट ही कर देती है जब युधिष्ठिर की तरफ इशारा करके वह जयद्रथ को बताती है।

एतं कुरुश्रेष्ठतमं वदन्ति युधिष्ठिरं धर्मसुतं पतिं मे।
- वन- २७०/७

कुरुकुल के इन श्रेष्ठतम पुरुष को ही धर्मनन्दन युधिष्ठिर कहते हैं। ये मेरे पति हैं। क्या अब भी सन्देह की गुंजाइश है कि द्रौपदी का पति कौन था?

७. कृष्ण संधि कराने गये थे। दुर्योधन को धिक्कारते हुए कहने लगे दुर्योधन तेरे सिवाय और ऐसा अधम कौन है जो बड़े भाई की पत्नी को सभा में लाकर उसके साथ वैसा अनुचित बर्ताव करे जैसा तूने किया है।

कश्चान्यो भ्रातृभार्यां वै विप्रकर्तुं तथार्हति।
आनीय च सभां व्यक्तं यथोक्ता द्रौपदी त्वया।।
- उद्योग- १२८/८

कृष्ण भी द्रौपदी को दुर्योधन के बड़े भाई की पत्नी मानते हैं। अतएव द्रौपदी के एक ही पति थे और वे धर्मराज युधिष्ठिर थे, यही तथ्य प्रमाणिक ठहरता है।

डॉ. सोमदेव जी द्वारा अमेरिका में सघन वेद प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका तथा आर्य समाज, शिकागो के आमन्त्रण पर भारत के पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा डॉ. सोमदेव जी, मुम्बई ने लगभग एक माह के अपने अमेरिका प्रवास में अपने उपदेशों के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार किया। आर्यजन आपके उपदेशों से बहुविध लाभान्वित हुए।

एक या पाँच

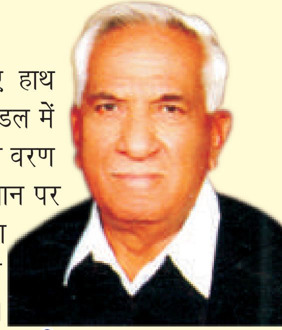

अभिमन्यु कुमार खुल्लर

सामान्यतः लेख या शीर्षक पहिले ही मस्तिष्क में आ जाता है क्योंकि विचार तंत्री उस ओर ही घूमी हुई होती है। उसे ही लिख देता हूँ। संशोधन की आवश्यकता कम ही पड़ती है, पर महाभारत के जिस पात्र-के बारे में एक लेख **'माम विवस्त्र कुरु मा'** लिख चुका हूँ। वह पात्र अभी भी चुम्बकीय शक्ति से मुझे जकड़े हुए है। उसी के विषय में पुनः एक लेख लिखते हुए, शीर्षक देने में थोड़ा रुकना चाहता हूँ-

ब्राह्मणवेशधारी अर्जुन ने अभी लक्ष्यभेद नहीं किया था। स्वयंवर सभा में कृष्णा ने प्रवेश ही किया था कि उसके सौन्दर्य का मादक नशा युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव के अतिरिक्त दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण, विकर्ण, शिशुपाल, जरासन्ध, शल्य आदि सबको आहत कर चुका था। जिस कृष्णा, पांचाल नरेश की पुत्री द्रौपदी के सौन्दर्य की चर्चा सम्पूर्ण भारत में थी, वह यौवनरस से भरपूर, अद्वितीय कमनीय देहयष्टि, कमल-पंखुड़ियों सदृश नयनों वाली, घुटने

तक स्पर्श करने वाले घुंघराले बालों वाली स्वयं उनके समक्ष उपस्थित थी। ऐसा लगता था जैसे कामदेव की समस्त कलाएँ उसमें समा गईं थीं। घायल हुए कोई नहीं बचा। न पाण्डव न कौरव और न ही कोई अन्य नर पुंगव।

कृष्णा के भाई धृष्टद्युम्न ने घोषणा की- 'जो नर श्रेष्ठ घूमती हुई मछली की आँख का लक्ष्य भेद कर पाएगा कृष्णा उसी को पति वरण करेगी।' एक-एक राजा लक्ष्य भेद के लिए आते गए और असफल होकर हताश बैठते गए। कर्ण लक्ष्य भेदने के

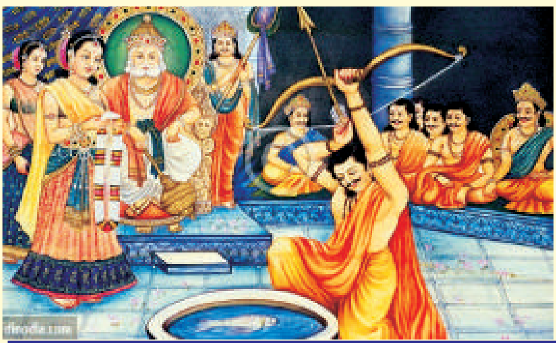

लिए आगे बढ़ा, अभी धनुष के लिए हाथ बढ़ाया था कि कृष्णा की चीत्कार वायुमंडल में गूँज गई- **'नाहं वरियामि सूतम'** सूत का वरण नहीं करूँगी। अपमानित कर्ण अपने स्थान पर जाकर बैठ गया। पाण्डवों का अता पता नहीं था। लाक्षागृह में उनके भस्म हो जाने की कथा सर्वत्र फैल चुकी थी। लक्ष्य भेद होगा भी या नहीं, संशय की स्थिति बन गई थी। सभी राजा तो पराजित हो चुके थे।

ब्राह्मण दल से एक भिक्षोपजीवी ब्राह्मण उठकर रंगमंच की ओर अग्रसर हुआ। महाराज द्रुपद के समीप पहुँचकर प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति माँगी। अनुमति मिलते ही वह धनुष तीरों की तरफ बढ़ा। पलक झपकते ही उसने लक्ष्य भेद कर दिया। कृष्णा ने निःसंकोच प्रत्युत् अत्यन्त उल्लासपूर्वक जयमाला, वरमाला उसके गले में डाल दी। वह ब्राह्मण विश्व का अन्यतम् धनुर्धर सव्यसाची अर्जुन होगा, इसकी कल्पना भी असंभव थी। महाराज द्रुपद और धृष्टद्युम्न को लगा कृष्णा का स्वयंवर उनकी मनोकामना पूरी करने के स्थान पर दारुण चिन्ता का कारण बन गया। भिक्षोपजीवी ब्राह्मण के साथ राजलक्ष्मी कृष्णा कैसे निर्वाह कर पायेगी?

पूर्ण यौवन प्राप्त पाँच बेटों की माँ कुन्ती का असमंजस में पड़ना स्वभाविक ही था। वह खूब अच्छी तरह जानती थीं कि यौवन में काम का ज्वार कितना तीव्र होता है। कौमार्य अवस्था में वह स्वयं कर्ण को जन्म दे चुकी थीं। भीम भी हिडिम्बा के साथ वैवाहिक जीवन के पश्चात् घटोत्कच को जन्म देकर परिवार के पास लौट आया। पाँचों में श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन ही था जो स्वयंवर में भाग ले सकता था। ऊपरवाले दो भाई और नीचे वाले दो भाई प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते थे और यदि लेते भी तो उनको उतनी ही भीषण पराजय मिलनी थी जितनी अन्य नरेशों को मिली थी।

और अब प्रतियोगिता जीतकर अर्जुन कृष्णा को घर ले आया

था। इन सभी के नेत्रों में कृष्णा के लिए अनुराग आसक्ति का भाव समझ लेना कुन्ती के लिए असंभव नहीं था। (सातवलेकर जी ने यह दायित्व युधिष्ठिर को दिया है जो स्वयं कृष्णा पर आसक्त था इसलिए मुझे स्वीकार्य नहीं है।) यह आसक्ति परिवार-विग्रह का कारण बन सकती है, इसलिए कुन्ती ने तय किया कि येनकेन प्रकारेण अर्जुन के मन में द्रौपदी के लिए एकमात्र अधिकार को द्रवीभूत करना होगा।

पाण्डव सुंसस्कारित थें। उनके मन में अग्रजों के लिए आदर और छोटों के लिए स्नेह घुट्टी में मिला हुआ था। अर्जुन को बरगलाया जा सकता था कि यदि उसने कृष्णा से विवाह किया

तो दोनों बड़े भाइयों के विवाहित न होने के कारण सामाजिक लांछना मिलेगी। इसे परिवेदन कहा जाता है और परिवेदन पाप है और यह वेदविरुद्ध भी है। यह पाप पूरे परिवार को झेलना पड़ेगा। कन्यादान व्यक्ति विशेष को नहीं पूरे परिवार को मिलता है। अर्जुन पर माँ के कथन का सार्थक असर पड़ा। परिवार में विग्रह का कारण उसका द्रौपदी के लिए न्यायोचित स्वाभाविक आकर्षण भी नहीं बनना चाहिए। इसलिए वह तटस्थ हो गया, मौन हो गया। द्रौपदी की दृष्टि से उसका यह अनासक्त भाव छिपा न रह सका। दिल की बात दिल ही में रह गई। तीनों के तर्क तत्कालीन सामाजिक संदर्भों में भी कितने लचर और अर्थहीन थे।

सातवलेकर जी ने हिडिम्बा को अत्यन्त सुन्दरी बताया और कुन्ती ने भीम से उसके विवाह की अनुमति दी थी, अंकित किया है। परिवर्तित परिस्थिति में यहाँ कुन्ती ने भीम का हिडिम्बा से विवाह स्वीकार ही नहीं किया। उसे हिडिम्बा की कामतृप्ति का आधार माना। यह भी कितना भोथरा तर्क था। वनवासी, स्वछन्द परिवेश में पली-बढ़ी युवती नगरीय परिवेश में आना स्वीकार नहीं करती तो उसे काम पीड़िता घोषित कर, परिवार से छेक दो।

परिवार में जिस मोर्चे को कुन्ती ने संभाला था, द्रुपद और धृष्टद्युम्न के सामने उसी मोर्चे को श्रीकृष्ण और वेदव्यास जी ने संभाला। दोनों के कारण अलग-अलग थे पर हल एक ही निकलता था। ये दोनों ही आशंकित थे कि कृष्णा भाइयों के विग्रह का कारण बन सकती है। ऐसी स्थिति में दुर्योधन चौकड़ी को इनका सर्वनाश करने में सुगमता हो जावेगी। इसके विपरीत यदि पाँचों पाण्डवों का विवाह कृष्णा के साथ कर दिया जावे तो पांडवों की शक्ति बिखरने के बजाय ज्यादा घनीभूत हो जावेगी क्योंकि कृष्णा रूप और बुद्धि की खान है। उनमें फूट कभी नहीं होने देगी।

इसके अतिरिक्त कृष्ण का स्वप्न अत्याचारी शासकों का विनाश और धर्म की स्थापना में व्यवधान उपस्थित हो सकता है। पारिवारिक विग्रह में उलझे होने के कारण पाण्डव एक जुट नहीं रह पायेंगे। पाण्डवों की सम्पूर्ण शक्ति और पांचालों की, मित्रों सगे संबंधियों सहित शक्ति, श्रीकृष्ण के उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक नहीं, अपरिहार्य है। द्रुपद और धृष्टद्युम्न ने पाँचों पाण्डवों से द्रौपदी के विवाह को आसानी से स्वीकार नहीं किया। पांचालों में प्रचलित बहुपतित्व प्रथा का उदाहरण देने पर द्रुपद ने कहा कि उनका परिवार इस प्रथा को बहुत पहले ही छोड़ चुका है। उन्होंने आशंका व्यक्त की कि अन्य नरेश उनकी कन्या पर लांछन लगायेंगे। कृष्ण और वेदव्यास जी ने विशेष परिस्थितियों में बहुपतित्व प्रथा और शास्त्रों का उदाहरण देकर उन्हें आश्वस्त किया। द्रुपद ने अपनी सहमति प्रदान कर दी।

सबसे पीड़ादायक था, कृष्णा और अर्जुन की नैसर्गिक प्रबल, निष्पाप, निष्कलुष भावनाओं का दमन, पारिवारिक सुख, शान्ति और कृष्ण के स्वप्न की पूर्ति में सहायक होने के नाम पर। अर्जुन और कृष्णा के समान रूप से सखा होने पर भी उनकी भावनाओं का आदर करने या प्रश्रय देने के स्थान पर समग्र पाण्डवों का हित साधन और अपने लक्ष्य की पूर्ति श्रीकृष्ण के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण थी। व्यक्तिगत सम्बन्ध उनके लिए गौण थे। श्रीकृष्ण और वेदव्यास जी के परामर्श, पाण्डवों की अभिरुचि, माँ कुन्ती की सहमति तथा स्वयं कृष्णा की स्पष्ट अनापत्ति को मानकर महाराज द्रुपद और युवराज धृष्टद्युम्न पाँचों पाण्डवों से कृष्णा के विवाह को सहमत हो गए।

कथानक के अत्यन्त महत्वपूर्ण पात्र होने के कारण द्रौपदी पात्र का मूल्यांकन करना भी उचित होगा। द्रौपदी को गौण कर देखिए- महाभारत का समस्त लालित्य समाप्त हो जाता है। द्रौपदी का समग्र सौन्दर्य और बुद्धिकौशल उसे एकवस्त्रा, घसीट कर लाए बिना दुर्योधन, दुःशासन और कर्ण के अभिमान को, द्रुपद सभा में लगी मर्मान्तक पीड़ा को, शान्ति कैसे मिल सकती थी? जबकि वे स्वयंवर के बाद से पल-पल मृत्युपीड़ा से बढ़कर अपमान की पीड़ा को झेल रहे थे। मासिक स्त्राव से भीगी एक वस्त्र पहिने द्रौपदी का रुदन क्रन्दन वह भी कौरवों की राजसभा में? कितनी दारुण स्थिति थी।

इतनी विकट परिस्थिति में भी द्रौपदी के प्रखर प्रश्न ने सम्पूर्ण

राजसभा को जिसमें सम्राट् धृतराष्ट्र, साम्राज्ञी गांधारी, कौरव कुलभूषण भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य उपस्थित थे, सभी को विस्मय विमूढ़ ही नहीं किया निरुत्तर भी कर दिया। सभी सही उत्तर जानते थे कि हारा हुआ जुआरी पत्नी को दाँव पर नहीं लगा सकता था क्योंकि पत्नी, पत्नी है सम्पत्ति नहीं। पर राजसभा के उस विषाक्त वातावरण में जिसमें सम्राट् स्वयं **'किं जितम्' 'किं जितम्'** कर रहे हों, अश्वयम्भावी अपमान से बचने के लिए अथवा स्वार्थ के वशीभूत मौन रहे। भीष्म का यह कथन कि राजा जो करता है ठीक करता है, आग में घी डालना हुआ। उस पर तुर्रा यह कि वह अकेले युधिष्ठिर की पत्नी नहीं सब भाइयों की पत्नी थी। यह बात दाँव पर लगाने के शकुनि के प्रस्ताव के अन्तर्भूत थी और स्वीकृति देने वाला युधिष्ठिर भी जानता था कि शकुनि क्या चाहता था।

श्रीकृष्ण को इस घटनाक्रम का कुछ पता नहीं था। वह तो बलराम के साथ शाल्व से युद्धरत थे। वनवास भुगतते हुए चारों भाइयों ने समस्त कथा सुना दी। कृष्णा की भीषणतम दुर्गति क्यों हुई, कुरु श्रेष्ठों के होते हुए भी? किसी ने रोका नहीं, धिक्कारा नहीं मौन रहे, यानि दुर्योधन और दुःशासन की काली करतूतों का समर्थन ही किया। बात गले नहीं उतरी। सच बात जानने के लिए कृष्णा से मिलना होगा। घोर अपमान से कुचली हुई सर्पिणी ने सम्पूर्ण घटनाक्रम और वार्तालाप सखा कृष्ण को सुनाया। पाण्डवों की मनोकामना संधि के विपरीत अपनी दृढ़ कामना भी प्रकट कर दी। महाराज महाबली द्रुपद की पुत्री, महारथी धृष्टद्युम्न की बहिन, अद्वितीय और अनुपम कृष्ण की सखी को युद्ध चाहिए, वह भी कौरवों के समूल विनाश के साथ। कृष्ण के सब संशय मिट गए। वार्तालाप समझाइश आदि से कुछ नहीं होगा। वहाँ तो पूरे कुएँ में भाँग पड़ी है। समझ में आई रूपसी बुद्धिमती कृष्णा की महत्ता।

जो यह मानते है कि धर्मराज युधिष्ठिर अथवा अर्जुन ही के साथ कृष्णा का विवाह हुआ वे मूलभूत त्रुटि करते हैं-

१. युधिष्ठिर ने द्यूत सभा में यह नहीं कहा कि कृष्णा मेरी पत्नी है और इसे दाँव पर लगाने का मुझे अधिकार है। इसके विपरीत अत्यधिक क्रोधित भीम ने सहदेव को कहा कि आग ले आओ, इसके वह हाथ जला देता हूँ जिनसे द्रौपदी को दाँव पर लगाया था। क्या भीम की इस स्वतः प्रेरित प्रतिक्रिया से यह ध्वनित नहीं होता कि द्रौपदी अकेले युधिष्ठिर की पत्नी नहीं थी?

२. यदि अर्जुन के साथ द्रौपदी के विवाह को मानें तो युधिष्ठिर की धर्मराज छवि का मटियामेट हो जाता है। वीर्य शुल्का द्रौपदी द्वारा जयमाला वरमाला पहनाने से विवाह का ६० प्रतिशत कार्य समाप्त हो जाता है। शेष संस्कार तो औपचारिकता मात्र रह गया था। इन परिस्थितियों में छोटे भाई की पत्नी से युधिष्ठिर का विवाह अपहरण कहलायेगा। अर्जुन से विवाह के पश्चात् द्यूत सभा में द्रौपदी को दाँव पर लगाने का कोई औचित्य ही नहीं बनता।

३. खाण्डव वन में और एक साल के अज्ञातवास की अवधि में केवल द्रौपदी ही पाण्डवों के साथ गई थी। अन्य विवाहिता अपने-अपने मायके चली गई थीं।

४. अश्वत्थामा द्वारा रात में पाण्डव पक्ष का सर्वनाश करने पर उसने एक बार नहीं अनेक बार कहा कि उसने द्रौपदी के सभी पुत्रों को मार डाला है। यह नहीं कहा कि युधिष्ठिर के सभी पाँचों पुत्रों को मार डाला।

५. सबसे ठोस और अकाट्य प्रमाण यह है कि हिमालय की यात्रा में, बर्फ में शरीर को गलाकर मारने की प्रक्रिया में पाँचों

पाण्डवों के साथ केवल द्रौपदी ही गई थी। किसी पाण्डव की पत्नी नहीं।

उपरोक्त सभी विवरणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि द्रौपदी ने स्वेच्छा से परिस्थितियों से समझौता कर, मन में पाँचों पाण्डवों को पतिरूप में स्वीकार कर लिया था। इसलिए वह सभी के साथ कुशलतापूर्वक निभा पाई। उनमें ईर्ष्या, द्वेष बढ़ने के स्थान पर सौहार्द्र बढ़ा। पाण्डवों के अन्य विवाह कर लेने पर भी ईर्ष्या द्वेष की अग्नि अपनी सौतनों में नहीं जलने दी और न ही पाण्डवों पर उसकी पकड़ ढीली हुई।

- सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
२२ नगर निगम क्वार्टर,
जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर ४७४००१
टेलीफोन नं. ०७५१-२४२५९३१

सबरीमला मंदिर में महिलाओं को पूजा अर्चना का निषेध असंवैधानिक है-सुप्रीम कोर्ट

- कृष्ण बोहरा

१२ फरवरी को सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक निर्णय देते हुए कहा कि सबरीमला मंदिर में महिलाओं को पूजा अर्चना से रोकना असंवैधानिक है। जब वेदों में स्त्री पुरुष में भेद नहीं तो सबरीमला मंदिर में क्यों? सुप्रीम कोर्ट ने केरल सरकार तथा मंदिरबोर्ड को जवाब देने के लिए ६सप्ताह का समय दिया था। केरल के पश्चिमी घाट पर स्थित सबरीमला मंदिर में हर साल लाखों श्रद्धालु पहुँचते हैं। भगवान शिव और विष्णु के अंश अयप्पा प्रभु का यह पावन मंदिर अपनी अनोखी परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध है। महिलाओं के लिए निषिद्ध परम्परा के बावजूद लाखों महिलाएँ हर वर्ष सबरीमाला आती हैं लेकिन उन्हें मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है इसलिए वे बाहर रहकर ही पूजा अर्चना करती हैं। यह परम्परा बहुत प्राचीन काल से है।

मंदिर में प्रभु अयप्पा की मूर्ति योगीस्वरूप में है। यह मंदिर नवम्बर-दिसम्बर में मण्डलपूजा, मकर संक्रान्ति, महा विश्व संक्रान्ति और प्रत्येक मलायाली माह के पहले पाँच दिन खुलता है। यह मंदिर सघन पेरियर टाईगर रिजर्व फोरेस्ट के अन्दर है। इसलिए यहाँ जंगल के रास्ते से जाना पड़ता है। यहाँ शेर, तेंदुए और हाथी का खतरा बना रहता है।

इसी प्रकार महाराष्ट्र में अहमदनगर के पास शिंगणापुर गाँव में स्थित शनि मंदिर में भी महिलाओं को मुख्यवेदी पर पूजा पाठ और तेल चढ़ाने का अधिकार नहीं है। यहाँ २६ जनवरी को 'भूमाता बिग्रेड' की अगुवाई में सैंकड़ों महिलाओं ने मंदिर में प्रवेश करने की कोशिश की लेकिन कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के कारण महिलाएँ मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकीं।

इसी प्रकार महाराष्ट्र में मुम्बई स्थित हाजीअली की दरगाह पर भी महिलाओं को जाने की इजाजत नहीं है। कारण यह दिया गया कि इस्लाम में किसी मजार पर महिलाओं के आने की सख्त मनाही है। मुम्बई के महालक्ष्मी तट पर समुद्र में कुछ दूर तक बनी है हाजी अलीशाह बुखारी की मजार। दरगाह तक जाने के लिए समुद्र के कुछ भीतर तक पक्का ऊँचा रास्ता बना है जो समुद्र में ज्वार आने पर पानी में डूब जाया करता है। दरगाह मुम्बई महानगर की पहचान है जहाँ देश-विदेश से हर रोज हजारों की संख्या में दर्शक और श्रद्धालु पहुँचते हैं। २०११ तक दरगाह पर महिलाएँ और पुरुष बेखटके जा सकते थे लेकिन अचानक ट्रस्ट ने दरगाह में महिलाओं के प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी। यहाँ भी मुम्बई उच्च न्यायालय में भारतीय मुस्लिम महिला संगठन की ओर से केस चल रहा है।

आजाद भारत के ७० वर्षों बाद भी महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार नहीं है। एक ओर भारत के संविधान में दोनों को समान अधिकार दिए हैं। दूसरी ओर महिलाओं को अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। एक ओर तो हम महिला सशक्तीकरण की बात करते हैं दूसरी ओर महिलाएँ अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रही हैं। कुछ दिन पहले मुम्बई के आजाद मैदान में भारतीय मुस्लिम महिलाओं ने हाथों में बड़े-बड़े बोर्ड लेकर प्रदर्शन किया। बोर्डों पर लिखा था-

बहनें माँगें आजादी, बेटी माँगे आजादी,
माएँ माँगें आजादी, पत्नी माँगे आजादी

एक और बोर्ड पर लिखा था-

अपने हक की खातिर, हमको दुनिया से टकराना है,
मिलकर कदम बढ़ाना है।

तृप्ति देसाई, संस्थापक, भूमाता रणरागिणी ब्रिगेड ने शनि शिंगणापुर मंदिर में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, अन्याय के मुद्दे पर संघर्ष की राह पकड़ी है। अब सुप्रीम कोर्ट ने भी अपने ऐतिहासिक निर्णय में सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा की है। जब संविधान में महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिए हैं तब यह विरोधाभास क्यों?

सेवानिवृत्त प्राचार्य
मुहल्ला जेल गराऊड,
मकान नं. ६४१- सिरसा, हरियाणा

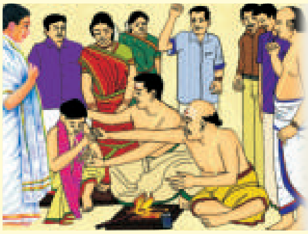

संस्कारों का अन्तिम संस्कार

– प्रो. शाम लाल कौशल

भारत ऋषि मुनियों, पीर, पैगम्बरों का देश है। यहाँ प्रस्फुटित ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा रामायण, गीता, गुरु ग्रन्थ साहिब आदि सहस्रों वर्षों से मानवता का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करते रहे हैं। भारत को अपनी संस्कृति, सभ्यता तथा परम्परा पर नाज रहा है। हमारे यहाँ सभी धर्मों, जातियों, समुदायों तथा प्रदेशों द्वारा सभी तीज त्यौहार मिल जुलकर हर्षोल्लास के साथ मनाने की परम्परा रही है। हमारे यहाँ पराये धन को मिट्टी, परायी स्त्री को माँ, बहन या बेटी की तरह समझने की अनूठी परम्परा रही है। बड़े छोटे का लिहाज करना आम बात मानी जाती रही है। हमारे यहाँ हमसाया या पड़ोसी सगे भाई से भी बढ़कर माननीय तथा विश्वासपात्र समझा जाता है जो हर सुख दुःख में काम आता है। हमारे यहाँ ऐसे संस्कार दिए जाते हैं कि पिता की आज्ञा का

पालन करते हुए श्री रामचन्द्र जी जैसा बेटा राजसिंहासन को ठोकर मारकर वनवास चला जाये, अन्धे माँ बाप को बैंगी में बिठाकर श्रवण कुमार जैसा बेटा तीर्थ यात्रा कराने चला जाये, सती सावित्री पत्नी ऐसी कि मृत पति सत्यवान को जीवित कराने के लिए यमराज के साथ भिड़ जाये। हमारी परमात्मा से प्रार्थना ऐसी है कि- **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।'** संतोष, संयम, समर्पण, विश्वास, परहित, दया, धर्म, सत्कर्म, अहिंसा, मोक्ष आदि हमारे संस्कारों का अभिन्न अंग रहे हैं जिसकी वजह से भारत विश्व का आध्यात्मिक गुरु रहा है।

लेकिन आज के बदले हुए हालात देखकर विश्वास नहीं होता कि यह वही भारत है जिस पर जन्म लेने के लिए देवता लोग भी तरसते थे। सत्यवादी हरिश्चन्द्र के देश में लोग झूठ, पाखण्ड, धोखा, फरेब, मक्कारी का सहारा लेकर हर काम में अपनी नैया पार कर लेना चाहते हैं। भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में शामिल होकर लोग भ्रष्ट तथा अनैतिक तरीके अपनाकर धन कमाने के लिए दिन का चैन तथा रातों की नींद बरबाद कर रहे हैं। आज हर भारतवासी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहंकार की लपेट में आया हुआ है। मांस, मछली, मद्यपान, परस्त्रीगमन एक आम बात हो गई है। गेरुए वस्त्रधारी आज के संन्यासी लोगों को लाख चौरासी के चक्र से बचाने के बदले में खुद ही ढोंग, पाखण्ड, ऐशपरस्ती, व्यसनों आदि के चक्रव्यूह में फँसे हुए हैं। शासक या राजा का प्रजा-पालन तथा प्रजा की रक्षा करना परम धर्म होता है लेकिन आज के शासक द्रौपदी रूपी प्रजा का खुद ही चीर हरण कर रहे हैं। अपने परिवार के लिए सभी हथकण्डे अपना कर धन सम्पति इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। आज संस्कारों का ऐसा अंतिम संस्कार हो रहा है कि पति-पत्नी का आपस में पहले जैसा प्रेम-प्यार, मेल-जोल, आपसी विश्वास, त्याग देखने को भी नहीं मिलता।

महिलाओं के साथ मारपीट, बलात्कार, अपहरण आदि आम बात हो गईं हैं। स्त्रियों में पहले जैसी लाज, शर्म, मान-मर्यादा, ममता, नारीत्व वाली बातें देखने को नहीं मिलती। कन्या भ्रूणहत्या भी करके जब लोग पुत्र प्राप्त करते हैं और वही बेटे अपने बूढ़े माँ-बाप की सेवा तो दूर उनका तिरस्कार, अपमान तथा अवहेलना करते हैं। कई बार तो पीटकर घर से बाहर निकाल देते हैं। लगता है कि जैसे संस्कारों का अंतिम संस्कार ही हो गया है। आज स्वार्थ, अहंकार तथा लालच के वश में होकर भाई-भाई का, मित्र-मित्र का, पड़ोसी-पड़ोसी के खून का प्यासा बना हुआ है तथा उनके कर्म में बिल्कुल प्रेम, सम्मान और अपनेपन का भाव नहीं है। किसी को लोक परलोक की कोई चिन्ता नहीं। कोई किसी का नहीं। सभी को अपनी-अपनी पड़ी है। घोर कलियुग है। सभी को एक दूसरे के मन में खोट दिखाई देता है।

लेकिन यह सब तो मानवता को पतन की तरफ ले जाने वाला है। संस्कार तो आखिर संस्कार ही है। आखिर हमारे पूर्वज बेवकूफ तो नहीं थे कि जो हमारे लिए अच्छे संस्कार छोड़ गए। आदमी की पहचान उसके संस्कारों से होती है। बिना अच्छे संस्कारों के आदमी पशु के समान है। अगर देश में सच्चाई, ईमानदारी, परिश्रम, आपसी भाईचारा, प्रेम-प्यार, सुख-शान्ति आदि बनाये रखनी है तो अच्छे संस्कारों का होना आवश्यक है। दया, धर्म, परहित, संतोष, प्रेम प्यार, मीठे वचन, ममता, सरलता, देशभक्ति माता-पिता तथा बड़ों के प्रति श्रद्धा-सम्मान, माँ-बाप, भाई-बहिन तथा अन्य संबंधियों तथा मित्रों के प्रति कर्तव्य परायणता ही हमारे संस्कारों का आधार होना चाहिए। हर आदमी को अपना धर्म पालन करते हुए ईमानदारी तथा परिश्रम से काम कर, किसी को दुःख तथा पीड़ा नहीं पहुँचाकर हक-हलाल का सात्विक भोजन करना चाहिए तथा विचार तथा व्यवहार शुद्ध रखने चाहिए। सभी बातों के बावजूद माँ-बाप बड़े बुजुर्गों, शिक्षकों, धार्मिक गुरुओं तथा समाज सुधारकों का यह परम धर्म है कि खुद भी अच्छी बातों पर अमल करें तथा इनका प्रचार तथा प्रसार भी करें।

मकान नं. ९७५-बी/२०, राजीव निवास,
शक्तिनगर, ग्रीन रोड, रोहतक १२४००१

मनुष्य की स्वतंत्रता बनाम निश्चितता

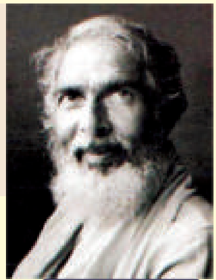

पंडित धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

भारत वर्ष में सामान्य तौर पर यह विश्वास किया जाता है कि हमारा भविष्य हमारे जन्म लेने से पहले ही निश्चित हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो हमारे जीवन में जो कुछ घटित होता है वो वे क्रमिक घटनाएँ होती हैं जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता। यहाँ तक भी कह दिया जाता है कि हमारे जीवन में हर घटना के घटित होने का दिन और समय भी निश्चित है। एक श्लोक में कहा है

यदात्रा लिखितं ललाट पटके। तत् प्रोज्झितुं क: क्षम:।।

अर्थात् सर्वशक्तिमान् के द्वारा किसी के मस्तक पर जो कुछ भी लिख दिया गया है उसको मिटाया नहीं जा सकता। चाणक्य ने भी कहा-

आयु: कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च।
पंचैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिन:।। - चाण. ४/१

अर्थात् आयु, शिक्षा, कर्म, धन-सम्पत्ति और मृत्यु इन पाँचों का निश्चय माँ की कोख में ही हो जाता है।

अगर इस धारणा को स्वीकार किया जाए तो सबसे बड़ा नुकसान यह है कि फिर जीवन में कुछ बड़ा करने का प्रयत्न करने के लिए कोई हेतु नहीं रह जाता। हम अपने आप से फिर पूछ सकते हैं कि हम कठिन मेहनत क्यों करें? अगर हमें जो कुछ प्राप्त होना है वो पहले से ही निश्चित है। इस मन:स्थिति का परिणाम यह होगा कि हम आत्मसन्तुष्ट और

आलसी हो जायेंगे और यह वेदों के भावना के भी विरुद्ध होगा। अगर हम निश्चितता के सिद्धान्त को स्वीकार कर लेते हैं तो फिर वेदों के अनेक मंत्र जो दीर्घ आयु, धन-सम्पत्ति, ज्ञान एवं बुद्धि की प्रार्थना लिए हुए हैं वे सब व्यर्थ हो जायेंगे। यही तथ्य कि कई प्रार्थना वेदों में विद्यमान हैं, इस बात की ओर संकेत करती है कि ईश्वर उस प्रार्थना को सुनेगा और स्वीकार भी करेगा, विशेषरूप से जब यह प्रार्थना अत्यन्त गंभीरता व समर्पण के साथ की जाये। यह बात तर्क बुद्धि पर खरी नहीं उतरती है कि कोई ऐसी प्रार्थना वेदों में दी गई है जिसका कोई महत्व नहीं, जो स्वीकार की ही जाने वाली नहीं। निश्चित रूप से ईश्वर हमारे साथ मजाक नहीं कर रहे। इसके अतिरिक्त वेदों में ब्रह्मचर्य, योग, तप इत्यादि की शिक्षा और प्रेरणा दी गई है जिससे कि हमारे जीवन की गुणवत्ता भी बढ़े और आयु-वृद्धि भी हो। साथ ही हमारी मानसिक और अन्य क्षमताओं में भी अभिवृद्धि हो। अगर सब कुछ पहले से ही निश्चित है तो फिर उक्त प्रकार के उपदेशों का क्या लाभ? क्योंकि वेदों में अनेक स्थलों पर कहा है कि अगर मनुष्य उक्त साधनों का आश्रय लेता है तो शारीरिक क्षमताओं की क्षय की जो प्रक्रिया है उसे और यहाँ तक की मृत्यु तक को भी स्थगित किया जा सकता है। निश्चितरूपेण तब वेद देववाद का समर्थन

नहीं करते यद्यपि यह अनेक हिन्दू शास्त्रों का भाग है। यह भी कि यदि प्रत्येक चीज अगर पूर्व निर्धारित है तो किसी भी अपराध अथवा नैतिक भ्रष्टता की जिम्मेदारी हमारी किस प्रकार की हो सकती है? यदि हमने जो कुछ किया है वह वही है जैसाकि हमारे लिए भाग्य में निर्धारित कर दिया था तो फिर उसके लिए हमको दोष और दंड किस प्रकार दिया जा सकता है? और यदि हम किसी पाप या अपराध के लिए उत्तरदायी नहीं हैं फिर हम उसके लिए पश्चाताप क्यों करें फिर स्व शुद्धिकरण (Self purification) की आवश्यकता ही क्यों रह जाती है जिसको वेदों में इतना महत्व दिया गया है। वेदों में ऐसे अनेक मंत्र आते हैं जिसमें ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि वो हमारे द्वारा किए गए पापकर्म व अपराधों के लिए हमें क्षमा करे। प्रश्न यह उठता है कि अगर हमने उक्त पाप व अपराध किसी दैवीय प्रकोप के अंतर्गत किए हैं जिसके लिए हम

निश्चित रूप से बिल्कुल भी जिम्मेदार नहीं हैं तो फिर हम परमात्मा से क्षमा क्यों माँगें?

इससे पूर्व कि इस विषय पर गंभीर विचार किया जाए यह महत्वपूर्ण है कि वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार यह जान लिया जाए कि आत्मा क्या है? इसका आकार प्रकार क्या है? और यह कहाँ रहती है? क्या यह चर्म चक्षुओं से देखने में आती है? इसका परमात्मा और प्रकृति से क्या संबंध है? यह अनित्य है या नित्य है? क्या हमारे द्वारा जो कर्म किए जाते हैं उनसे यह प्रभावित होती है? और उसके परिणामों को भी इसे भोगना पड़ता है? वो क्या चीज है जो इसको मैला करती है, दूषित करती है और क्या इसे दोबारा विशुद्ध किया जा सकता है? और तब क्या होता है जब आत्मा को मुक्ति प्राप्त होती है? हम यहाँ आत्मा के बारे में कुछ मूलभूत बातें प्रस्तुत कर रहे हैं।

१. आत्मा शरीर में सबसे मूल्यवान वस्तु है जिस क्षण यह शरीर को छोड़ देती है शरीर को मृत घोषित कर दिया जाता है।

२. हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जो कुछ ग्रहण करते हैं उसका निर्वचन, उसका अभिलेखन व उसकी स्मृति और उसके द्वारा आनन्द प्राप्ति यह सब आत्मा के माध्यम से ही संभव है। आत्मा के बिना जो कि ज्ञानेन्द्रियों की क्रियाओं में सामञ्जस्य दिखाती है, ज्ञानेन्द्रियाँ कार्य नहीं कर सकतीं।

"अगर हम निश्चितता के सिद्धान्त को स्वीकार कर लेते हैं तो फिर वेदों के अनेक मंत्र जो दीर्घ आयु, धन-सम्पत्ति, ज्ञान एवं बुद्धि की प्रार्थना लिए हुए हैं वे सब व्यर्थ हो जायेंगे।"

३. इसका अन्य महत्वपूर्ण कार्य मस्तिष्क और ज्ञानेन्द्रियों को सशक्त और नियंत्रित करना है।

४. एक बाल के अग्र सिरे के सैंकड़ों टुकड़े भी किए जायें तो भी आत्मा उससे सूक्ष्म है और आँखों के द्वारा नहीं देखी जा सकती।

५. ऐसा माना जाता है कि हमारे हृदय के निकट यह स्थित है।

६. परमात्मा और कारण रूप प्रकृति की भाँति यह भी शाश्वत और नित्य है। परन्तु यह इन दोनों से अनेक मायनों में भिन्न भी है।

७. निश्चितरूप से आत्मा परमात्मा की अपेक्षा से कम शक्तिशाली और कम ज्ञान रखने वाली है। ईश्वर के विपरीत यह अपूर्ण है और दूषित हो जाती है। विशेषरूप से वासना, क्रोध, अहंकार, राग-द्वेष और भय के कारण।

८. आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में अर्थात् विभिन्न योनियों में जाती रहती है जब तक कि मोक्ष प्राप्ति नहीं हो जाती।

९. जहाँ कि यह परमपिता परमात्मा के सानिध्य में असीम अवर्णनीय आनन्द को प्राप्त करती है। परन्तु परमात्मा में लय नहीं होती।

आत्मा के बारे में इतनी बातों को जान लेने के बाद प्रश्न उपस्थित होता है कि आत्मा मुक्त है या बद्ध? मोटे तौर पर देखा जाये तो मूल रूप से वेदों की दृष्टि से आत्मा कर्म करने में स्वतंत्र है। (कुछ प्रतिबन्धों के साथ) लेकिन अपने कर्मों के कारण बद्ध हो जाती है।

मैं जो बोलना चाहूँ उससे बोलने में स्वतंत्र हूँ पर चाहूँ तो चुप रहने में भी स्वतंत्र हूँ। किसी अन्य से मैं मधुर वचन भी कह सकता हूँ तो कठोर शब्दों का भी प्रयोग कर सकता हूँ। परन्तु एक विकल्प का आश्रय लेने के बाद, मैंने जो बोला (अथवा नहीं बोला) उसके परिणाम से नहीं बच सकता। अब मैं इस संदर्भ में कुछ भी नहीं कर सकता।

मैं स्वतंत्र हूँ कि चाहूँ तो आम के बीज बो सकता हूँ और चाहूँ तो जामुन के परन्तु किसी एक के बीज बोने के पश्चात् मैं दूसरे फल के उगने की आशा नहीं कर सकता। इस संदर्भ में अथर्ववेद १२/३/४८ के निम्न मंत्रों को उद्धृत किया जाता है।

न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति।

मंत्र का मुख्य भाव है :-

१. हम जो कार्य करते हैं उसके परिणामों से बचने अथवा भागने का कोई रास्ता नहीं है। अर्थात् हमने जो बोया है वही काटना होगा।

२. परिणामों को बदलने में (अनुकूल या प्रतिकूल करने में) किसी भी सत्ता की सिफारिश अथवा हस्तक्षेप कार्य नहीं करता।

३. किसी मान्य अथवा प्रबुद्ध मित्र की/सहायक की शरण भी कोई सहायता नहीं कर सकती।

४. हमारे कर्म, फल की भाँति हैं। जब वो पक जाते हैं तो अच्छे या बुरे परिणाम के रूप में हमें निश्चित रूप से प्राप्त होते हैं।

हमारी स्वतंत्रता पर कतिपय प्रतिबन्ध भी हैं। इसको हम एक

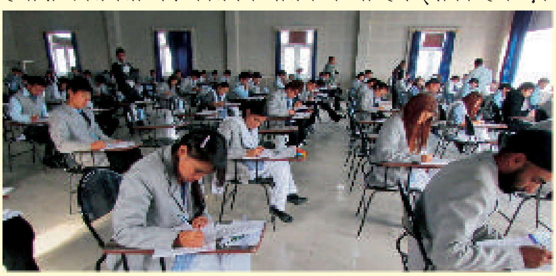

उदाहरण से समझ सकते हैं। एक परीक्षा कक्ष में एक अभ्यर्थी बैठा है। उसके हाथ में प्रश्न पत्र है। उसे इस बात की स्वतंत्रता है कि उत्तर में जो वह चाहे वो लिख सकता है। परन्तु प्रतिबन्ध यह है कि उस परीक्षा के लिए अथवा उत्तर देने के लिए अधिकारियों ने जो समय निश्चित किया है उसे उतने ही समय में उत्तर देना होगा। उसकी स्वतंत्रता उसको पाँच

मिनिट ज्यादा का समय भी नहीं दिला सकती। किसी अन्य व्यक्ति से सूचना प्राप्त करने या नकल करने के क्रम में भी उसकी स्वतंत्रता बाधित है। अब आप ऐसे व्यक्ति को कैसे व्याख्यायित करेंगे कि वह स्वतंत्र है अथवा बद्ध है। संभवतः

इसको इस रूप में कहा जा सकता है कि वह स्वतंत्र तो है परन्तु सभी संबंधित व्यक्तियों के हित को ध्यान में रखते हुए उसकी स्वतंत्रता को कुछ हद तक सीमित कर दिया गया है। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति को सड़क पर किसी भी दिशा में चलने की स्वतंत्रता है, परन्तु फिर भी सर्वहित में और उसके अपने हित में भी उसके ऊपर ट्रैफिक की कुछ सीमाएँ हैं ताकि टक्कर और दुर्घटना से वे बच सकें। मोटे तौर पर देखा जाये तो इच्छा की स्वतंत्रता और इसके ऊपर कुछ सीमाएँ जो लागू की गई हैं उनमें विभाजन नहीं है। वस्तुतः वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और इसी को सामंजस्यपूर्वक मानना होगा।

यहाँ विशेष ज्ञातव्य है कि आत्माओं पर ऐसे प्रतिबन्ध उनके अपने हित में हैं। अगर वे पूर्णतः बद्ध हों तो उनके विकास की संपूर्ण संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं और अगर वे पूर्णतः मुक्त हों तो न केवल उनके मध्य अहंकारों का टकराव होगा बल्कि ऐसी निरपेक्ष स्वतंत्रता भयंकर विनाश का लाइसेन्स दे देने के समान होगी।

भाषानुवाद- अशोक आर्य

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

नवलखा महल, गुलाबबाग में स्थित आर्यावर्त्त गैलेरी बहुत ही सुन्दर व आकर्षक है। इसमें स्वामी जी के जीवन की सजीव झाँकी प्रस्तुत की है। इसको देखकर मैं तो क्या कोई भी दर्शक मन्त्र मुग्ध हो जाएगा। इसमें स्वामी जी की ब्रह्मचर्य के बल एवं दूरर्शिता का अद्भुत दिगदर्शन होता है।

– राजेन्द्र आर्य, नेनोरा

स्वामी जी ने जीवन में बहुत कष्ट सहकर हिन्दू धर्म का अध्ययन करके इसमें अंध विश्वासों का नाश करके आर्य समाज की स्थापना की तथा समाज में व्याप्त कुरीतियाँ जैसे सती प्रथा, मूर्ति पूजा, भेदभाव का विरोध कर हिन्दू समाज में जागृति देने का कार्य किया।

– बाबूलाल मेघवाल, नागौर

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

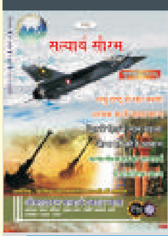

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १२ पर देखें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) — भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) — डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

समाचार

कोटा संभाग में वेद प्रचार का कार्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद प्रचार समिति, कोटा संभाग के प्रधान श्रीचन्द गुप्ता के अनुसार कोटा संभाग के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में १२ से १६ जून २०१६ तक वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न कराया गया। कार्यक्रम में भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह व पण्डित अग्निमित्र शास्त्री के प्रेरक उद्बोधन हुए। जिसमें वेदों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि वेदों के अध्ययन से व्यक्ति में पाप की भावना का नाश होता है और व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक क्रान्तिकारी परिवर्तन आता है। सभा का संचालन श्री कंवर लाल सुमन द्वारा किया गया। इन अवसरों पर श्री बनवारी लाल सिंघल ने भी भजन प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के संयोजक श्री कैलाश बाहेती ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। - कंवरलाल सुमन, आर्य समाज, कोटा

अलवर में क्रोस कन्ट्री दौड़

स्वतंत्रता सैनानी श्री छोटूसिंह आर्य, संस्थापक अध्यक्ष, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर के ८६ वें जन्म दिवस के अवसर पर, अलवर में १३ अगस्त २०१६ को रन फॉर अलवर, रन फॉर हैल्थ, रन फॉर पर्यावरण, रन फॉर क्लीन, अलवर, रन फॉर नारी सशक्तीकरण के नाम से क्रोस कन्ट्री दौड़ होगी। जिसमें आयु वर्ग के अनुसार एक से पाँच किमी. तक दौड़ सम्पन्न होगी। - प्रदीप आर्य

आर्य समाज, नागदा जंक्शन के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज, नागदा जंक्शन के चुनाव आर्य रामसिंह जी पटेल की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। इस अवसर पर श्री पूनमचन्द आर्य, श्री कमल आर्य एवं श्री जगदीश पांचाल को क्रमशः प्रधान, मंत्री और कोषाध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया। सभा का संचालन डॉ. पंडित लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने किया। सभी अधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज, हिरणमगरी, सेक्टर-४, उदयपुर में दिनांक १६ अगस्त से २४ अगस्त २०१६ में आर्य जगत् के प्रख्यात् मनीषी आचार्य सोमदेव जी, मुम्बई के तत्वावधान में ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमें वेदपाठी के रूप में आर्ष गुरुकुल, गौतमनगर के ब्रह्मचारियों ने अपनी सेवाएँ प्रस्तुत कीं। प्रातः तथा सांयकालीन सभाओं में आचार्य सोमदेव जी के प्रेरणास्पद प्रवचनों का लाभ भी जनसामान्य ने लिया। यज्ञ की पूर्णाहुति दिनांक २४ अगस्त २०१६ को हुई। जिसके पश्चात् सामूहिक भोज का भी आयोजन रखा गया। आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य समाज के प्रधान श्री भँवर लाल आर्य, मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा, श्री के. के. सोनी, श्री रामदयाल मेहरा आदि का पुरुषार्थ पूर्ण प्रयत्न समारोह की सफलता के मूल में रहा। श्री भूपेन्द्र शर्मा ने कार्यक्रमों का सफल संचालन किया।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ७/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ७/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री नन्द किशोर प्रसाद; सरायकेला (झारखण्ड), वैद्या श्रीमती आशा भूषण (भारती); मुजफ्फरपुर (बिहार), श्री रमेश चन्द्र प्रिय दर्शन; सीतामढी (बिहार), श्री रमेश आर्य; दीनानगर (पंजाब), किरण आर्या; कोटा (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री मुकेश पाठक; उदयपुर (राज.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; आर्य समाज, शाहपुरा (राज.), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), श्री यज्ञसेन चौहान, व्याख्याता; बिजयनगर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); डिसा (गुजरात), श्री गोवर्धन लाल झँवर; आष्टा (म.प्र.), श्री सरस्वती प्रसाद गोयल; सवाई माधोपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री पृथ्वी वल्लभदेव सोलंकी; उज्जैन (म.प्र.) । उपर्युक्त सभी सत्यार्थ सौरभ के सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन नेपाल २० से २२ अक्टूबर २०१६

इस वर्ष, अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलनों के क्रम में उक्त तारीखों में काठमाण्डू में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। समस्त खर्चों को मिलाकर यात्रा व्यय निम्न प्रकार रहेंगे:-

यात्रा नम्बर १ अ	हवाई जहाज द्वारा	चार रात पाँच दिन	पाँच सितारा होटल	३५०००/- रु. प्रति व्यक्ति
यात्रा नम्बर १ अ	हवाई जहाज द्वारा	चार रात पाँच दिन	तीन सितारा होटल	२७०००/- रु. प्रति व्यक्ति
यात्रा नम्बर १ अ	हवाई जहाज द्वारा	चार रात पाँच दिन	अतिथि भवन	२२०००/- रु. प्रति व्यक्ति
यात्रा नम्बर १ ब	वातानुकूलित बस	पाँच रात छः दिन	साधारण होटल	७५००/- रु. प्रति व्यक्ति
यात्रा नम्बर २ अ	हवाई जहाज द्वारा	सात रात आठ दिन	पाँच सितारा होटल	४६५००/- रु. प्रति व्यक्ति
यात्रा नम्बर २ अ	हवाई जहाज द्वारा	सात रात आठ दिन	तीन सितारा होटल	३६५००/- रु. प्रति व्यक्ति
यात्रा नम्बर २ ब	वातानुकूलित बस	सात रात आठ दिन	साधारण होटल	११५००/- रु. प्रति व्यक्ति

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- (1) श्री अरुण वर्मा- ०९८१००८६७५९ (2) श्री एस. पी. सिंह- ०९५४००४०३२४ (3) श्री शिवकुमार मदान- ०९३१०४७४९७९

समस्त राशि ड्राफ्ट द्वारा- श्री सुरेश चन्द आर्य, प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१ पर भेजें।

ध्यातव्य- पहेली के नए नियम पृष्ठ ३० पर अवश्य पढ़ें।

११ से १८ सितम्बर २०१६ तक निःशुल्क योग ध्यान साधना शिविर

आनन्द धाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में उक्त शिविर का आयोजन महात्मा चैतन्य मुनि जी के सानिध्य में सम्पन्न होगा, जिसमें अनुभवी आचार्यों व महात्माओं द्वारा उपासना, योग, प्राणायाम आदि कराये जायेंगे। जिसमें योगदर्शन पठन-पाठन की भी व्यवस्था होगी। इस अवसर पर आचार्य चन्द्रेश जी, आचार्य सुकामा जी, श्री अखिलेश भारतीय जी आदि विद्वान्, विदुषियों के उद्बोधन का लाभ उठाया जा सकेगा।

- भारत भूषण, आनन्द आश्रम, प्रधान

शहद और स्वास्थ्य

शहद या मधु हमेशा से रसोई में इस्तेमाल होने वाला एक स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ रहा है, साथ ही सदियों से एक महत्वपूर्ण औषधि के रूप में भी उसका इस्तेमाल होता रहा है। दुनिया भर में हमारे पूर्वज शहद के कई लाभों से अच्छी तरह परिचित थे। एक औषधि के रूप में उसका इस्तेमाल सबसे पहले सुमेरी मिट्टी के टेबलेटों में पाया गया है जो करीब ४००० साल पुराने हैं। लगभग ३० फीसदी सुमेरी चिकित्सा में शहद का इस्तेमाल होता था। भारत में शहद सिद्ध और आयुर्वेद चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण अंग है जो चिकित्सा की पारंपरिक पद्धतियाँ हैं। प्राचीन मिस्र में इसे त्वचा और आँखों की बीमारियों में इस्तेमाल किया जाता था और जख्मों तथा जलने के दागों पर प्राकृतिक बैंडेज के रूप में लगाया जाता था।

आजकल चिकित्सा समुदाय में शहद पर काफी वैज्ञानिक शोध चल रहे हैं जो हमारे पूर्वजों द्वारा सोचे गए शहद के तमाम प्रयोगों की जाँच कर के उन्हें पुष्ट कर रहा है। इनमें से कुछ पर नजर डालते हैं-

शहद के स्वास्थ्य लाभ

१. शहद आपके खून के लिए अच्छा है।

शहद शरीर पर अलग-अलग तरह से असर डालता है, जो इस पर निर्भर करता है कि आप उसका सेवन कैसे करते हैं। अगर शहद को गुनगुने पानी में मिलाकर पिया जाए तो उसका खून में लाल रक्त कोशिकाओं (आरबीसी) की संख्या पर लाभदायक असर पड़ता है। लाल रक्त कोशिकाएँ मुख्य रूप से शरीर के विभिन्न अंगों तक खून में ऑक्सीजन पहुँचाती हैं। शहद और गुनगुने पानी का मिश्रण खून में हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ाता है, जिससे एनीमिया या खून की कमी की स्थिति

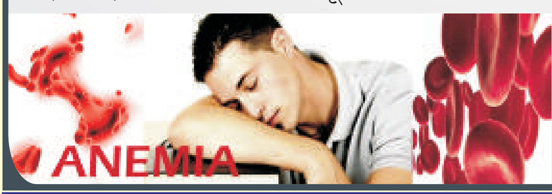

में लाभ होता है। आयरन की कमी यानी एनीमिया की स्थिति तब आती है जब आहार में लौह तत्व को कम मात्रा में ग्रहण किया जाता है या शरीर उसे पर्याप्त रूप से सोख नहीं पाता। इससे रक्त की ऑक्सीजन ढोने की क्षमता प्रभावित होती है।

ऑक्सीजन ले जाने की क्षमता कम होने से थकान, साँस फूलना और कई बार उदासी और दूसरी समस्याएँ होती हैं। शहद रक्त की ऑक्सीजन ले जाने की क्षमता को बढ़ाते हुए इन समस्याओं को कम कर सकता है।

खून में ऑक्सीजन का होना बेहद जरूरी होता है। आपका शरीर कितना स्वस्थ है या बीमारी के बाद कितनी जल्दी खुद को ठीक कर पाता है, यह आपके खून में मौजूद ऑक्सीजन की मात्रा पर निर्भर करता है। खासकर महिलाओं को इस मामले में खास ख्याल रखने की जरूरत होती है, क्योंकि उन्हें हर महीने मासिकचक्र से गुजरना पड़ता है। चूँकि हर महीने उनके शरीर से एक खास मात्रा में खून बाहर निकल जाता है, इसलिए एनीमिया की संभावना उनमें पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा पाई जाती है। अगर मस्तिष्क को उचित मात्रा में खून नहीं मिलेगा तो शरीर और दिमाग को जैसा काम करना चाहिए, वे वैसे नहीं कर पाएँगे।

२. शहद-रक्तचाप में फायदेमन्द

शहद का नियमित सेवन सर्कुलेटरी सिस्टम और रक्त की केमिस्ट्री में सन्तुलन को पाने में न सिर्फ आपकी मदद करता है, बल्कि आपको ऊर्जावान और फुर्तीला भी बनाए रखता है। अगर आपको निम्न रक्तचाप की शिकायत है और अगर आप नीचे बैठे-बैठे अचानक उठने की कोशिश करते हैं तो आपको चक्कर आ जाते हैं। इसी तरह से अगर आप अपना सिर नीचे करते हैं और आपको चक्कर आते हैं तो इसका मतलब है कि आपको उच्च रक्तचाप की समस्या है। या तो उच्च

रक्तचाप की वजह से या फिर ऑक्सीजन की कमी की वजह से आपको चक्कर आते हैं।

शहद का सेवन हमारे शरीर के इन असन्तुलनों को दूर करता है। शरीर में रक्त का दबाव शरीर की जरूरतों पर निर्भर करता है। लोगों को लगता है कि उच्च रक्तचाप एक बीमारी है, लेकिन सच्चाई यह नहीं है। दरअसल, शरीर अपनी जरूरतों के हिसाब से खून का दबाव तय करता है। अगर किसी कारणवश शरीर को सामान्य रूप से ज्यादा ऑक्सीजन या पोषक तत्वों की जरूरत होती है या फिर खून की गुणवत्ता वैसी नहीं होती, जैसी होनी चाहिए तो शरीर का खून पंप करने वाला पम्पिंग सिस्टम ज्यादा खून पंप करना शुरू कर देता है। इसके लिए अंगों में शीघ्र और तेज प्रवाह के लिए दिल तेजी से खून को पंप करता है, जिससे खून का दबाव बढ़ता है।

निम्न रक्तचाप के पीछे भी वजह होती है, जैसे शरीर को ही निम्न दबाव की जरूरत हो सकती है या फिर जन्मजात वजहों से ही दिल इतना मजबूत नहीं होता कि वह शरीर की जरूरत के मुताबिक ज्यादा खून पंप कर पाए। ये भी हो सकता है कि शरीर के परिसंचरण तंत्र यानी सर्कुलेटरी सिस्टम में कोई दिक्कत हो अथवा खून की रासायनिक संरचना के चलते ऐसा हो रहा हो। अकसर एक साथ कई वजहों के चलते ऐसा होता है। ठीक इसी तरह उच्च रक्तचाप के कई परिणाम सामने आते हैं, लेकिन शुरु में तो उच्च रक्तचाप खुद ही एक परिणाम है- यह एक परिणाम है, कारण नहीं है।

योग का नियमित अभ्यास करने वाले व शरीर को खास तरह की प्रक्रिया में ढालने वाले लोगों के लिए अपने सर्कुलेटरी सिस्टम और रक्त की केमिस्ट्री में सन्तुलन बनाए रखना बेहद जरूरी होता है। शहद का नियमित सेवन इस सन्तुलन को पाने में न सिर्फ आपकी मदद करता है, बल्कि आपको अपेक्षाकृत ऊर्जावान और फुर्तीला भी बनाए रखता है।

३. कीमोथैरेपी में असरदायक

इसके भी कुछ प्रारंभिक प्रमाण हैं कि शहद कीमोथैरेपी के मरीजों में श्वेत रक्त कोशिकाओं (डब्ल्यूबीसी) की संख्या को कम होने से रोक सकता है। एक छोटे प्रयोग में कीमोथैरेपी के दौरान कम डब्ल्यूबीसी संख्या के जोखिम वाले ४० फीसदी मरीजों में उपचार के तौर पर दो चम्मच शहद पीने के बाद वह समस्या फिर से नहीं उभरी।

४. शहद चीनी से कम नुकसानदायक है

शरीर पर सफेद चीनी के हानिकारक प्रभावों के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। शहद उसका एक बढ़िया विकल्प है जो उतना ही मीठा है मगर उसका सेवन

अहानिकर है। हालाँकि शहद के रासायनिक तत्वों में भी सिंपल शुगर होती है मगर वह सफेद चीनी से काफी भिन्न होती है। उसमें करीब ३० फीसदी ग्लूकोज और ४० फीसदी फ्रक्टोज होता है यानि दो मोनोसेकाराइड या सिंपल शुगर और २० फीसदी दूसरे कांप्लेक्स शुगर होते हैं। शहद में एक स्टार्ची फाइबर डेक्सट्रिन भी होता है। यह मिश्रण शरीर में रक्त शर्करा का स्तर संतुलित रखता है।

५. शहद योगाभ्यासियों के लिए अच्छा है

योग अभ्यासों को करने वाले लोगों के लिए शहद का सेवन रक्त के रसायन में संतुलन लाता है, इसलिए उन्हें खास तौर पर इसका सेवन करना चाहिए। शहद का नियमित सेवन शरीर को अधिक जीवन्त बनाता है। सुबह अभ्यास शुरू करने से पहले गुनगुने पानी में थोड़ा सा शहद मिलाकर लेने पर शरीर सक्रिय हो जाता है।

क्रमशः ....

- साभार- sadhguru.org

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०६३१४५३५३७६
कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें
प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

सत्यार्थ-पीयूष

राजा-पद दैवीय नहीं?

राजा तभी तक अपने पद पर है जब तक वह प्रजारंजन के कार्य में संलग्न रहता है तथा निरंकुश, स्वेच्छाचारी नहीं होता अन्यथा प्रजा को अत्याचारी और अन्यायी राजा को

राज्य से च्युत करने की व्यवस्था हुआ करती थी। बाल्मीकीय रामायण के अध्याय ३३ में वर्णन है कि क्रोधी, कंजूस, मद्यपी, घमण्डी और धोखेबाज राजा की दुर्दिन में उसकी प्रजा सहायता नहीं करती है। वह न तो उसकी सेवा करती है न ही उससे डरती है। ऐसा राजा शीघ्र ही पद-च्युत कर दिया जाता है। शतपथ ब्राह्मण १२-६-३ में ऐसे राजा को पदच्युत करके देश से निर्वाचित कर देना का उल्लेख है। इसी प्रकार पुराने समस्त राजनीति के विद्वानों के अनुसार राजा की शक्तियों को सीमित रखने तथा उसके कामी, क्रोधी एवं अत्याचारी होने की दशा में पद-च्युत करने का आदेश है। महाभारत में किसी ऋषि से किसी ने पूछा-

यः पापं करुते राजा काममोहबलात्कृतः।
पत्यासन्नतस्यतस्यषे! किं स्यात्पापप्रमाशनम्॥

अर्थात् हे ऋषे! जो राजा काम और मोह के वशीभूत होकर पाप करता है उसके लिए क्या करना चाहिए? ऋषि उसका समाधान बताते हैं:-

दुराचारान् यदा राजा प्रदुष्टान्न नियच्छति।
तस्मादुद्विजते लोकः सर्पाद्वेश्मगतादिव॥
तं प्रजातानुवर्वन्ते ब्राम्हणा न च साधवः।
ततः संशयमाप्नोति तथा बध्यत्वमेव च॥

अर्थात् जब राजा दुराचारी हो जाए और समस्त प्रजा उससे ऐसे तंग हो जाए जैसे घर में आए साँप से हो जाती है तो समस्त प्रजाओं, ब्राह्मणों तथा संन्यासियों को उचित है कि उसकी आज्ञाओं का पालन न करें तथा अन्त में उसे मार ही डालें।

उपरोक्त उदाहरणों से राजा के दैवी उत्पत्ति के सिद्धान्त का पूर्णतः खण्डन होता है।

योग्यता सापेक्षवाद- महर्षि दयानन्द की उपरोक्त सभी अवधारणाओं के संबंध में यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि उनका प्रजातंत्र ऐसे मताधिकार पर आधारित नहीं है जहाँ न तो निर्वाचक मण्डल की कोई योग्यता या समझ-बूझ है और न ही निर्वाचन के प्रत्याशी की। महर्षि अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था कर सभी प्रजाजनों को शिक्षा के साथ-साथ धर्म तथा उदात्त मानवीय आदर्शों से मण्डित देखना चाहते थे। वहीं पर राजा (सभापति), तीनों सभा के सभासदों, तथा प्रमुख राजपुरुषों सहित राज्यकर्मियों यहाँ तक कि समुचित निष्पक्ष न्याय व्यवस्था हेतु साक्षी के लिये, अन्य राज्यों के साथ व्यवहार हेतु दूत के लिए भी सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में विशद् योग्यताओं का निर्देशन करते हैं जिनका विशेष विवरण आगे आवेगा। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

सभासदों की योग्यता

वेद वेदांग में पारंगत, सनातन दण्डनीति, न्यायविद्या, आत्मविद्या (ब्रह्मविद्या) के जानकार, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, योगाभ्यासी, दृढ़ उत्साही, कामज व क्रोधज १८ व्यसनों से दूर, मृगया और मद्यपानादि दुष्ट कामों में न फँसने वाले सभासद हों। (सत्यार्थ प्रकाश ६ समु. के आधार पर)

शुक्राचार्य २/८-६ के अनुसार-

कुल, गुण और शील से महान्, शूरवीर, राजभक्त, मधुरभाषी, हित की बात कहने वाले कष्ट सहने वाले, सदा धर्म का पालन करने वाले, कुमार्गगामी राजा को बौद्धिक कौशल से कुमार्ग से हटाने में समर्थ, पवित्र आचार-विचार वाले, मात्सर्य, काम, क्रोध, लोभ और आलस्य रहित- इन गुणों से युक्त हों।

सम्पादक- अशोक आर्य

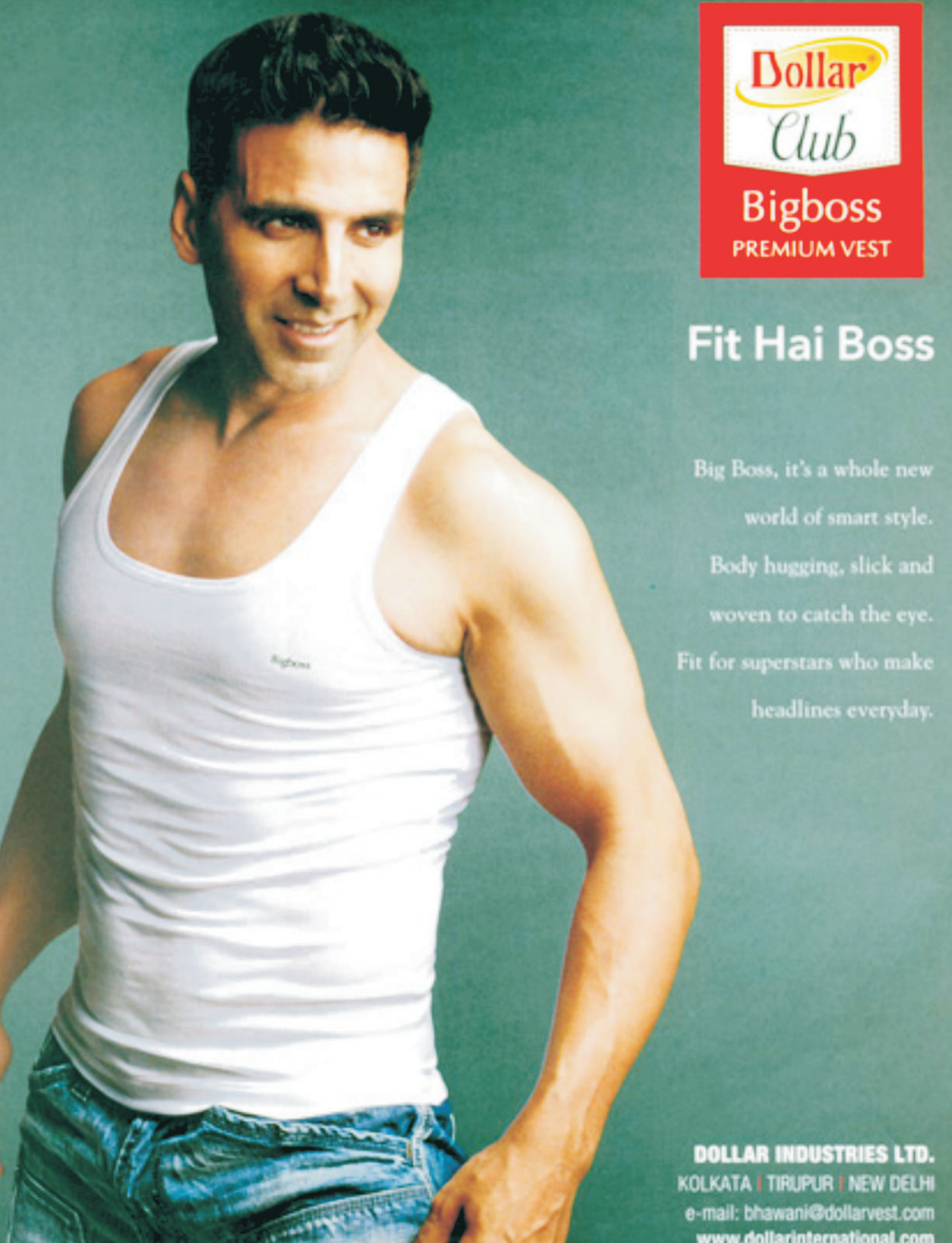
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new
world of smart style.
Body hugging, slick and
woven to catch the eye.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 september-2016 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

अज्ञानी लोग वैद्यकशास्त्र वा पदार्थविद्या के पढ़ने - सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपात ज्वरादि शारीरिक और उन्मादादि मानस रोगों का नाम भूत प्रेतादि धरते हैं।

- सत्यार्थप्रकाश पृ. ३०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर